श्री जिनवरेंद्रायनम

जैन श्वेताम्बर साधु मार्गी हैदराबाद सिकंद्राबाद

नित्यस्मरण

No - 1415

और

तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज रचित

श्री केवलानन्द छन्दावली

सेठ छोगमलजी [illegible] जवनवर (भोपाल)

ने दक्षिण–हैदराबाद मे प्रत १५०

फाइन आर्ट कंपनीके का० छा०

अमूल्य.

वीर संवत २४३९, विक्रम सं १९७० इ १९१३

॥ प्रस्तावना ॥

गाथा-लब्भंती विउला भोए। लब्भंती सुरसंप्पया॥
लब्भंती पुत्त मित्तंच । एग्यो धम्मो दुर्लभइ॥

इस चराचर विश्वमें इस जीवको विपुल विस्तीर्ण भोग देवताकी सपदा और पुत्र मित्रादी स्वजन इत्यादी समुग्रही अनंती वक्त मिलगइ, और मि-मिलनी सहज हैं, परंतु एक धर्मकी प्राप्ती होनी-ही मुशकिलहै इस लिये जिन्न सुलभ बौधियोंकों महान पून्योदयसे सत्यधर्मकी प्राप्ति हुइ है, उनको चाहिये कि विशेष नहीं बने तो अष्ठ प्रहरमें एक घंटा तो अवश्य मेव(जरुरही)धर्म कार्यमें-लगना ही लगना.

एक मुहूर्त (४८) मिनट) की धर्म क्रियाको जैनी लोक " सामायिक व्रत " कहते है यह वृत आत्माको समभाव में लाताहै, अनुपम व अमिश्र आनन्दकी वानगी (Specimen of une-

bualled and unmixed]or)होताहै परन्तु कितनेक लोक " सामायिक व्रत ' धारन कर, धीकथा आ दी अनेक अयोग्य व्यवहारमें फस मनको स्थिर नहीं रख सके हैं यह प्राप्त हुये महा लाभको व्यर्थ गमा देते हैं, उनके मनको स्थिर करनेके लिए यह निश्य स्मरण "और "केवलाभ्य प्र श्नावली " नामकी पुस्तक बनाके जिनोने जैन सिवपे उपकार किया है उनका जीवन चरित्र संक्षेपमें हो देने योग्य हैं

मारवाड देशके मेडते ग्रामके रहीस बडे साथ ओसवाल ज्ञाती कांसटीया गौत्रके सेठ कस्तुरचंदजी व्योपार निमित मालवके मास टे ग्राममें जा रहे उनका अकस्मात मृत्यू होने से उनकी सुपत्नी जयाराबाई चार पुत्र को छोड साधुमार्गी पंथमे दिक्षा धारण करी माता पिता और पत्नीके वियोगसे दुःखी हो कवलचंदजी मोपाल जा रहे और पिता

कै धर्मानुसार मंदिर मार्गी कें पंच प्रति क्रमण नवस्मरण पूजा वगैरे कंठाग्र किये उस वक्त समातन जैन धर्म(साधूमार्गी) के परम पुज्यश्री कहानजी ऋषिजी महाराजके सम्प्रदायके महामुनि श्री कुंवरजी ऋषिजी महाराज पधारे तब भाइ फूलचंदजी धाडीवाल के· वलचंदजीको जबरदस्तीसे व्याख्यानमें लेगये उसवक्त महाराज श्री सुयगडांगजी सूत्र १ श्रतस्कंध १ अध्येयन ४ उदेसे की १० मी गाथाका अर्थ समजारहेथेकी, ज्ञान पानेका येही सार है कि किंचित मात्र हिंसा नहीं करनी अहिंसा धर्म सब मतांतरी कबूल करते हैं, परं वैसी प्रवृती करे वोही सचे· इत्यादि सुण केवल चंदजी हमेशा आना सूरु किया और शनैः शनैः प्रतिक्रमण पच्चीस बोलका थोक वगैरे अभ्यास करते २ दिक्षा लेनेके भाव हूवे परन्तू भोगवली कर्मोदयसे स्वजनोने

जबरदस्ती ब्रेहिग्रामके शेठ छादमलजी दादीयाकी पूत्री फुलासइबाके साथ लग्न किया, और उनसे दो पुत्रको छोड मरगइ तब पुत्र पालनार्थ स्वजनोंकी प्रेरणासे तीसरा ब्याव करने मारवाड जाते रस्तेमें पुज्य श्री नन्दसागरजी महाराजके दरशन करने रतलाम उतेर वहां अनेक श्रावके जाण अरपुवामीमे सजोड ब्रह्मचर्य धारनेवाले भाइजी कस्तूरचंदजी मिले, और कहने लगे "जहरका प्याला सहजही हुलगया, पुनः उसे भरने क्यों तैयार होते हो" यों कहते पुज्यजीके पास आये पुज्यजीने फरमाया की "एक वक्त वैरागी बनतेथे अब बनके (वर) बनने त्यार हुये क्या?" ऐसे बोध सुन केवलचंदजी ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर भोपाल आये, और दिक्षा लेनेका विचार स्वजनको दरशाया, सवा महिना 'भिक्षाचरी' कर भक्षा के ११ वर्षकी उम्मरमे

स० १२४३ चेत सूदी ५ को मुनीराज श्री पुनाऋषीजीके पास दिक्षा ले पुज्यश्री खूवा ऋषिजी महाराके शिष्य हूय. ज्ञानाभ्यास कर तपस्या प्रारंभ करी तपस्याके थोक, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६ १७, १८, १९, २०, २१, ३०, ३१, ४१, ५१, ६१, ६३, ७१, ८१, ८४, ९१, १०१, १११, और १२१ इस तपमे छाछ, सूठ, कालालूग, भुंघणेका तंबाखू, और पाणी ये द्रव्य लेतेये और छे महीनेकी एकांतर वगैरे छुटक तपस्या बहुत सी करी हैं महराज श्री मालवा मेवाड मारवाड सोंदवाड ढुढाड हा डोती पूर्व पंजाब बागड सोरठ झालावाड गुजरात दक्षिण आदिदेश फरसते २ हमारे सुभाग्यसे स० १९६२ की साल क्षुधा त्र षादि अनेक दुष्कर परिसह सहन करते तीन ठाणे श्री (केवलऋषिजी श्री अमोलखऋषिजी

और श्रीसुखाऋषीजी) हैदराबाद पधारे (की यहां अबतक कोइभी जैन साधू नहीं पधारेथे) चार कमान नवकोटी मकानमें विराजमान हुवे श्री सुखाऋषिजीकी बिमारीके कारणसे चौमासा उतरे बाद विहार न हुवा और फागण वदी १० को श्री सुखाऋषिजी स्वर्गस्थ हुवे फिर उष्णकालू और बोकट रस्तेके कारणसे श्री सिंघने महाराज श्रीको विहार न करने दिया अत्यंत आग्रह से दूसरा चतुर्मास यहां कराया दुसरे चतुर्मासमें श्रीकेवलऋषीजी महाराज उपरा उपरी बिमारीसे और वृद्ध अवस्थामें विहार न होता देख, श्रीसिंघने महाराजको स्थिरवास विराजनेकी विनंती करी महाराज श्री सात वर्षसे यहां विराज ते हैं सहांसे में बहोत साधू मार्गी बनाये और अनेक सुधारे किये हैं

महाराज श्री केवल ऋषिजीकी बनाइ

हुइ कविता सुणके वहुत जनोने ग्रहण करने की इच्छा दरसाइ परन्तू तपश्वीजीका मन प्रसिद्दीमे आनेका नहीं देखा तब मैने बाल ब्रम्हचारी मुनी श्री अमुलख ऋषिजीसे याचना करी. उनने कृपाकरके जित्नी कवीता मूझे दी उसका संग्रह कर यह छोटीसी पुस्तक छपवा मेरे स्वधर्मी भाइयोंको समर्पण करता हुं

ले. लाला, सुखदेवसाहाजी ज्वालाप्रशाद

विषयानुक्रम

" नित्य स्मरण "

विषय	पृष्ठ
१ नवकार मंत्र	१
२ सम्यक्त्वी के तीन तत्त्व	१
३ वंदना का पाठ	
४ सामायिक विधीपुर्वक	१
५ अनुपूर्वी	१
६ चौवीस तीर्थंकरनाम	११
७ वीस विहरमानके नाम	१७
८ इग्यार गणधर के नाम	१०
९ सोले सतीके नाम	१८

विषय	पृष्ठ
१ लघु साधु वंदना	१९
१ बडी साधु वंदना	१०
२ चार सरणा	१०
१ तीन मनोर्थ	
१५ चौदा नियम	४१

'केवलानन्द छन्दावली'

विषय	पृष्ठ
१ मंगलाचर्ण-सवैया	४१
१ श्री आदीनाथ स्तवन	१८
१ श्री महावीरस्वामी स्तवन	१०
४ श्री पार्श्वनाथजीका स्तवन	१४

विषय	पृष्ठ
५ श्रीचौवासी जिन स्तवन	५७
६ श्री गुरुजीका स्तवन	५८
७ श्री जिनवाणी स्तवन	५९
८ पंचकल्याणकी सज्झाय	६१
९ प्रभुसे विनंती	६४
१० उववाइसूत्रभावार्थ सज्झाय	६६
११ कुंडरीकपुंडरीक सज्झाय,	६९
१२ पनरेतीर्थीकी सज्झाय	७४
१३ सिखामणकी सज्झाय	८०

विषय	पृष्ठ
१४ बारेमासकी सज्झाय	८२
१५ कूगुरुकी सज्झाय.	८५
१६ सात दुर्व्यश्न सज्झाय	८७
१७ आठ मदकी सज्झाय	८९
१८ धर्म ध्यानकी सज्झाय	९२
१९ चित्तसमाधिके १ बोल.	९३
२० कमलावनीकी लावणी.	९५
२१ कालकी लावणी	९९
२२ कायाकी चेतनको शिखामण	१०३
२३ दयाकी लावणी	१०६

श्रीमान सरदारचंदजी संतोषचंदजी
सिंघवी नागोर की ओरसे सादर भेट,

॥ श्री नवकार महामंत्र * ॥

॥ १ ॥ णमो अरिहंताणं ॥

॥ २ ॥ णमो सिद्धाणं ॥

॥ ३ ॥ णमो आयरियाणं ॥

॥ ४ ॥ णमो उवज्झायाणं ॥

॥ ५ ॥ णमो लोए, सव्व साहुणं ॥

---

* विधिः शुद्ध धोती और दुपट्टा अपने पास रख, बाकी सब कपडे दूर रख, एकांत स्थानमें पूजनीसे पूंज, बेठका बिछा, मुहपति मुखपर बांधकर यह नमस्कार मन्त्र जपना

॥ सम्यक्त्वके तीन तत्वका पाठ ॥

॥ आर्या वृतम् ॥

अरिहंतो महदेवो । जाव जीव सूसाहू
णो गुरुण ॥ जिण पण्णत्त तत्तं । एए सम्मत्ते
मए गहियं ॥१ पंचिन्दिय संवरणो । तह नव
विह बंभचेर गुत्ती धरो ॥ चउविह कषाय मु
क्को । इह अठारस्स गुणेहि सजुत्तो ॥२॥ पंच
महव्वय जुत्तो । पंच विहायार पालण सम
त्था ॥ पंच समिइ तिगुत्तो । छत्तीस गुणो गु
रु मज्झ ॥३॥

वंदनाका पाठ

तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण वंदामि, नमं
सामि सक्कारेमि, सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं,
देवयं चेइयं पज्जुवासामि, मथ्थएण वंदामि
समस्त सन्तो जी महाराजजी साहब'

॥ सामायिक सूत्र विधी युक्त ॥

☞ [प्रथम नवकार मंत्र और तीन तत्वका पाठ पढकर फिर " तिक्खुत्ता " के पाठ से वदना कर कर फिरः—]

इच्छा कारणका पाठ कहनाः-

आवश्यइ इच्छा कारण संदेह सह भगवान इरिया वहीयं पडिक्कसामि, इच्छं इच्छामि पाडिक्कमिउ इरिया वहीयाए विरह णाए गमणा गमणे, पाण संक्रणे, बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसाउतिंग, पणग दग, मट्टी मक्कडा, संताणा संक्कमणे, जे मे जीवा वीराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेंदिया चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्ति या, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया किलामिया, उद्दाविया, ठाणाऊठाणं, संका

मिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कड

फिर "तस्सउत्तरी" का पाठ कहना,

तस्सउत्तरी करणेण, पायच्छित्त करणेण, विसोही करणेण, विसल्लि करणेण, पावाणं कम्माणं, निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्गं, अन्नत्थउसीसएण, निससीएणं, खासिएण, छीएणं, जभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेण, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहीं अगसचालेहिं सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं, एवम इएहिं आगारेहिं, अभग्गा, अविराहिओ, हुजमे काउस्सग्गा, जाव अरिहनाण, भगवताणं, नमोक्कारेण, नपारमि तावकायं ठाणेण, माणेणं झाणेण, अप्पाण वासिरामि ॥

अथ हारयविहि और पर नम

कार " का काउस्सग्ग मनमें करना और नमो अरिहंताणं ऐसा बोलके काउसग्ग पारना; फिर—

लोगस्सका पाठ कहना.

(अनुष्टुप वृतम्.)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म तित्थयरेजिणे ॥
आरिहंते कितइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥

(आर्या वृतम्.)

उसभ—माजियं च वंदे, संभव मभिनंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, शिअल सिज्जंच, वासुपुज्जंच ॥ विमल—मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथूं अरं च मल्लिं, वंदे मुनि सुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिठनेमिं, पासंतह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवमंए अभित्थुया, विहुय रयमला, प-

हीण जर मरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसियंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तमं दिंतु। ६ । चंदेसू निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

☞ अब खड़ा होकर तिक्खुत्ताका पाठ सालचार विधी सहित पढ़कर वंदना करकर गुरु आदिककी पास सामायिक की आज्ञा मंगना गुरु आदिक न होनसे पूर्व तथा उत्तर दिशाकी सन्मुख खड़ा होकर श्री सीमंधरस्वामी की आज्ञा मंगकर सामायिक आदरना

सामायिक ग्रहण करनेका पाठ

करेमिभंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियम पज्जुवासामी, दुविहं तिविहेणं न करमी नकारवमी, मनसा वा

यसा, कायसा; तस्सभंते, पडिक्कमामि निंदा-मि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि.

☞ फिर नीचे बैठ डावा गोडा ऊभा रख उसपर दोनो हाथ जोडकर

नमोथ्थुणं का पाठ कहना.

॥ नमोथ्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तिथ्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पूरिसवर पुंडरियाणं, पुरिसवर गंधहथ्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपइवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चख्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसाराहिणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं, दीवो, ताणं, सरणगइ पइठा, अप्पाडिहयवरनाणं, दंसण धराणं, वियट छऊमाणं,

जिणाणं, जावयाण तिन्नाणं, तारयाण, बुद्धाण, बोहियाण, मुत्ताण, मोयगाणं, सव्वनूण सव्वदरिसिण, सिव-मयल-मरुय-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह मप्पुणराविति, सिद्धि गइ, नामधयं, ठाण सपत्ताण, नमोज्जिणाण, जियमयाणं ॥ (दुसरेमें) ठाण सपाविउ कामस नमो जिणाण

☞ विधि –पिछे स्थिर चित्तसे नामस्मरण, शास्त्र श्रवण मनन करना जब सामायिक पारन का वक्त होवे तब इरियावही तस्स उत्तरी की पाटी कहना और इरियावहीका काउसग्ग कर प्रगट लोगस्स कहे दो वार नमोत्थुणं कहना फिर नीचे मुजब पाटी कहना—

सामायिक पारनेकी पाटी

एहवा नवमा सामायिक व्रतका पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, त

जहा ते आलोउं, मणदुप्पडिहाणे, वयदुप्प-डिहाणे. कायदुप्पडिहाणे, सामाइयस्सइ अकरणयाए, सामाइयस्स अणवुट्ठियस्स क-रणयाए तस्समिच्छामिदुक्कडं.

सामायिक समकाएणं, फासियं, पा-लियं, सोहियं, तिरियं, किट्टियं, आराहियं अणुपालियं, आणाए अणुपालिता नभवइ, तस्स मिच्छामि दूक्कडं.

समायिक में दश मनका दशवचन-का, बारे कायाका, यह बत्तीस दोषमेंसे जो कोइ दोष लगाहोवे तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

सामायिकमें स्त्री कथा, भत्त कथा, देश कथा, राजकथा ये चार कथामेंसे जो

कोइ कथा की गई होवे तो तस्स मिछामि दुक्कड

सामायिक व्रत विधिसें लिया, विधि-से पारा, विधि करनेमें अविधि हो गई होवे तो, तस्स मिच्छामि दुक्कड

सामायिकमें अतिक्रम, व्यतिक्रम अति चार, अणाचार, आणमें अजाणें, मनसे वचनसे कायासे जो कोई दोष लगा होवे, तो तस्स मिच्छामि दुक्कड

सामायिकमें कानो, मात्रा, मींडी, पद अक्षर कमी ज्याद, विपरित पाठ होवे तो अनंता सिद्ध केवली भगवंतकी साखे तस्स मिच्छामि दुक्कड

☞ फिर तीन नवकार मंत्र पढना

श्री अनुपूर्वी (१)

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

श्री अनुपूर्वी (२)

१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५

श्री अनुपूर्वी (३)

१	३	४	२	५
३	१	४	२	५
१	४	३	२	५
४	१	३	२	५
३	४	१	२	५
४	३	१	२	५

श्री अनुपूर्वी (४)

२	३	४	१	५
३	२	४	१	५
२	४	३	१	५
४	२	३	१	५
३	४	२	१	५
४	३	२	१	५

श्री अनुपूर्वी (९)

१	२	४	५	३
२	१	४	५	३
१	४	२	५	३
४	१	२	५	३
२	४	१	५	३
४	२	१	५	३

श्री अनुपूर्वी (१०)

१	२	५	४	३
२	१	५	४	३
१	५	२	४	३
५	१	२	४	३
२	५	१	४	३
५	२	१	४	३

श्री अनुपूर्वी (११)

१	४	५	२	३
४	१	५	२	३
१	५	४	२	३
५	१	४	२	३
४	५	१	२	३
५	४	१	२	३

श्री अनुपूर्वी (१२)

२	४	५	१	३
४	२	५	१	३
२	५	४	१	३
५	२	४	१	३
४	५	२	१	३
५	४	२	१	३

श्री अनुपूर्वी (१३)

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	३	१	५	२

श्री अनुपूर्वी (१४)

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

श्री अनुपूर्वी (१५)

१	४	५	३	२
४	१	५	३	२
१	५	४	३	२
५	१	४	३	२
४	५	१	३	२
५	४	१	३	२

श्री अनुपूर्वी (१६)

३	४	५	१	२
४	३	५	१	२
३	५	४	१	२
५	३	४	१	२
४	५	३	१	२
५	४	३	१	२

श्री अनुपूर्वी (१७)

२	३	४	५	१
३	२	४	५	१
२	४	३	५	१
४	२	३	५	१
३	४	२	५	१
४	३	२	५	३

श्री अनुपूर्वी (१८)

२	३	५	४	१
३	२	५	४	१
२	५	३	४	१
५	२	३	४	१
३	५	२	४	१
५	३	२	४	१

श्रा अनुपूर्वी (१९)

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	२	३	१
५	४	२	३	१

श्री अनुपूर्वी (२०)

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१

२४ तीर्थंकरोंके नाम

१ श्री ऋषभदेवजी (अपरनाम श्री आदिनाथजी)
२ श्री अजीतनाथजी
३ श्री संभवनाथजी
४ श्री अभिनंदनजी
५ श्री सुमतिनाथजी
६ श्री पद्मप्रभुजी
७ श्री सुपार्श्वनाथजी
८ श्री चंद्रप्रभजी
९ श्री सुविधिनाथजी (अपरनाम श्री पुष्पदंतजी)
१० श्री शीतलनाथजी

११ श्री श्रेयांसनाथजी
१२ श्री वासुपूज्य नाथजी
१३ श्री विमलनाथजी
१४ श्री अनंतनाथजी
१५ श्री धर्मनाथजी
१६ श्री शांतिनाथजी
१७ श्री कुंथूनाथजी
१८ श्री अर्हनाथजी
१९ श्री मल्लीनाथजी
२० श्री मुनिसुव्रतजी
२१ श्री नेमिनाथजी
२२ श्री रिष्टनेमीजी
२३ श्री पार्श्वनाथजी

२४ महावीरस्वामी (अपरनाम श्रीवर्धमानजी)

२० विहरमानके नाम.

१ श्रीसीमंधरस्वामी.	११ श्रीविशालधरस्वामी
२ श्रीजुगमंधिरस्वामी,	१२ श्रीचंद्राननस्वामी.
३ श्रीबाहुजीस्वामी.	१३ श्रीचंद्रबाहुस्वामी.
४ श्रीसुबाहुजीस्वामी	१४ श्रीभुजंगस्वामी.
५ श्रीसुजातस्वामी	१५ श्रीईश्वरस्वामी.
६ श्रीस्वयंप्रभूस्वामी	१६ श्रीनेमप्रभूस्वामी.
७ श्रीऋषभानंदस्वामी	१७ श्रीवीरसेनस्वामी.
८ श्रीआनंतवीरस्वामी,	१८ श्रीमहाभद्रस्वामी
९ श्रीसूरप्रभूस्वामी.	१९ श्रीदेवयसस्वामी.
१० श्रीवज्रधरस्वामी.	२० श्रीअजीतवीरस्वामी

११ गणधरके नाम.

१ श्रीइंद्रभूतिजी.	४ श्री विगतभूतिजी.
२ श्रीअग्निभूतिजी.	५ श्री सुधर्मास्वामी.
३ श्रीवायूभुतिजी.	६ श्री मंडीपुत्रजी.

७ श्री मोरीपुत्रजी
८ श्री अकंपितजी
९ श्री अचलजी
१० श्री मेतारजजी
११ श्री प्रभासजी

१६ सतीके नाम

१ श्री ब्राह्मीजी	९ श्री मृगावतीजी
२ श्री सुन्दरीजी	१० श्री चेलणाजी
३ श्री कौसल्याजी	११ श्री प्रभावतीजी
४ श्री सीताजी	१२ श्री सुभद्राजी
५ श्री राजेमतीजी	१३ श्री दमयंतीजी
६ श्री कुंताजी	१४ श्री सुलसाजी
७ श्री द्रौपदीजी	१५ श्री शिवाजी
८ श्री चन्दणाजी	१६ श्री पद्मावतीजी

यह चौविस तीर्थंकर बीस विहरमान ग्यारह गणधर सोलह सतीको त्रिकाल वंदणा नमस्कार होजो तिरनेका जाव मध्यपणे नहीं।

लघू साधू वंदणा

साधूजीने वंदणा नितनित कीजे, प्रह उगमते सूर रे प्राणी। नीच गतिमे ते नहीं जावे,पावे रिद्धि भरपूर रे प्राणी। साधूजीने वंदणा नितानितकीजे ॥१॥ म्होटा ते पंच महाव्रत पाळे, छकायरा प्रतिपाळरे प्राणी। भ्रमर भिक्षा मुनी सुझति लेवे, दोष बयालीस टाळरे प्राणी। साधुजीने वंदणा ॥२॥ ऋद्धि संपदा मुनि कारमी जाणी, दिधी संसारने पूठरे प्राणी। यां पुरुषारी सेवा करता। आठु कर्म जावे तूटरे प्राणी । साधूजीने वंदणा ॥ ३ ॥ एक एक मुनिवर रसनारा त्यागी। एक एक ज्ञानरा भंडाररे प्राणी । एक एक

मुनीश्वर वैयावच्चीया वैरागी, ज्यांरा गुणारो नाहीं पाररे प्राणी । साधूजीने वंदणा ॥ ४ ॥ गुण सत्तावीस करीने दीपे, जीत्या परिग्रह बाइसर प्राणी । बावन ता आनाचारज टाल, ज्यांने नमावु म्हारो शीशर प्राणी । साधूजीन वंदणा ॥५॥ जहाज समान ते सत ऋषीश्वर भवी जीवे बठा आयरे प्राणी । पर उपगारी मुनी दाम न मागे दव ने मुक्ती, पोंहोंचायर प्राणी । साधूजीने वदणा ॥६॥ ए शरणे प्राणी । मामा पात्र पात्र न लीलविलासरे प्राणी । जन्म जरा ने मरन मिटाय, फीर नहीं आवे गर्भावासर प्राणी । साधूजीने वदणा ॥७॥ ए र वचन आ सद्गुरु केरा, जो राखे मन म यर प्राणी । नर्कनिगोदमें ते नहीं जाय,

इम कहे जिनरायरे प्राणी । साधुजीनेवंदणा. ॥८॥ प्रभाते उठी उत्तम प्राणी, सुणे साधुरो वखाणरे प्राणी । इण पुरुषांरी सेवा करतां, पावे ते अमरवीमाणरे प्राणी । साधुजीने वं-दणा. ।९। सम्मत अठारे ने वर्ष अठावीसे, बुसी गांम चोमासरे प्राणि । मुनि आशकरणजी इण परबोले, हुं उत्तम साधुरो दासर प्राणी । सा धुजीनेवदणा॥१०॥

बडी साधू वंदणा.

नमुं अनंत चोवीशी, ऋषभादिक म-हावीर । आर्य क्षेत्रमां, घाली धर्मनी शीर ॥ १ ॥ महाअतुल्य बळि नर, शूर वीर ने धीर । तीर्थप्रवर्तावी, पहोंत्या भवजळ तीर ॥ २ ॥

सीमंधर प्रमुख जघन्य तीर्थंकर वीश। छे अ
ढाई द्वीपमां जयवंता जगदीश ॥ ३ ॥ एक
सो ने सित्तर, उत्कृष्ट पद जगीश। धन्य मो
टा प्रभुजी, ज्याने नमावुं शीश ॥ ४ ॥ केव
ळी दोय कोडी। उत्कृष्टा नव कोडि ॥ मुनि
दोसहस्र कोडि, उत्कृष्टा नव सहस्र कोडि
॥ ५ ॥ विचरे विदहम, मोटा तपसी घोर
। भावे करि वंदु, टाळ भवनी कोड ॥६॥
चोवीसी जिनना, सघळाइ गणधार। चौ
दसेने बावन, ते प्रणमु सुखकार ॥ ७ ॥
जिनसाशन नायक, धन्य श्री वीर जिणंद।
गोतमादिक गणधर वर्त्याव्यो आनंद ॥ ८ ॥
श्री ऋषभदेवना, भरतादिक सापुत। वैराग्य
मन आणी, संयम लियो अद्भुत ॥ ९ ॥ केव

ळ उपराज्यु करीकरणी करतून । जिनमत दीपावी, सघळा मोक्ष पहूंत ॥ १० ॥ श्री भरतेश्वरना, हुवा पटोधर आठ, आदित्य जशादिक, पहोत्या शिवपुर वाट ॥११॥ श्रीजिन अंतरना, हुवा पाट असंख्य । मुनि मोक्ष पहोत्या, टाळि कर्मना वंक ॥ १२ ॥ धन्य कपिल मुनिवर नमि नमुं अणगार । जिन तत्क्षिण त्याग्यो, सहश्र रमणि परिवार ॥ १३ ॥ मुनिवर हरकेशी, चित्त मुनिश्वर सार । शुद्ध संयम पाळी, पाम्या भवनो पार ॥ १४ ॥ वळी इखुकार राजा, घर कमळावति नार । भग्गू ने जशा, तेहना दोय कुमार ॥ १५ ॥ छेउ ऋद्धि छांडीने, लीधो संयम भार । इण अल्पकाळमां, पाम्या मोक्ष दुवार ।१६। वळी स

पाम्या शिवपूर क्षेम ॥२४॥ धन्य विजय घोष मुनि, जयघोष वळि जाण । श्री गर्गाचारज पहोत्या छे निर्वाण॥२५॥श्री उत्तराध्ययनमां, जिनवर कियां वखाण । शुद्ध मनथी घ्यावो, मनमां धीरज आण।२६॥वळि खंदक संन्याशी राख्यो गौतम स्नेह । महाविर समीपे, पंच महाव्रत लेह ॥ २७ ॥ तप कठण करीने, झोंसी आपणि देह । गया अच्युत देवलोके, च्यवि लेशे भवछेह ॥ २८ ॥ वळी ऋषभदत्त मुनि, शेठ सुदर्शन सार । शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गांगेय अणगार ॥२९॥ शुद्ध संयम पाळी, पाम्या केवळ सार । ए चारे मुनिवर, पहोत्यां मोक्ष माझार ॥३०॥ भगवंतनी माता धन्य सति देवानंदा । वळि सती जयंति,छोड

दिया घर फदा ॥ २१ ॥ ससि मुगते पहोत्या घळी मिरनी नंदा । महा सती सुदर्शना, घ णि सतियोना वृंदा ॥२२॥ वळीकार्तिक शेठे, पडिमाग्राहि शूरवीर । जीन्या महोरापर, तापस वळती खीर ॥२३ पछे चारित्र लीधो, मेत्री स हश्र आठवीर । मरी हुवा शक्रेन्द्र, च्यवि लेशे भव तीर ॥३४॥ वळी राय ऊदाइ, दियोमा णेजने राज । पछे चारित्र लेइने, सार्या आतम काज ॥३५॥ गंगदत्त मुनि आनंद, तरण तार परी जहाज । कुशळ मुनि रहो, दियो घणाने साज ॥२६॥ धन्य सुनक्षत्र मुनिश्वर, सर्वानु- भूति अणगार अगाधिक हुइने, गया देवलोक म झार ॥२७॥ च्यवि मुगते जाशे, सिंह मुनि श्वर सार । त्रीजा पण मुनिश्वर भगवतिमा

अधिकार ॥३८॥श्रेणिकना बेटा,म्होठा मुनिवर मेघ। तजी आठ अंतेउरि, आण्यो मन संवेग॥३९॥ वीरपे व्रत लेइने बांधी तपनीतेग, गया विजय विमाने च्यवि लेशे शिव वेग ॥४०॥ धन्य थावर्च्चा पुत्र, तजी बत्रीशे नार। जिन साथे नीकळ्या, पुरुष एकहजार ॥४१॥ शुकदेव संन्यासी, एक सहश्र शिष्यलार। पंचसयशुं शेलक, लीधो संयम भार ॥४२॥ सबी सहश्र अढाइ, घणा जीवोने तार। पुंडर गिरीपर कियो, पादोपगमन संस्थार ॥४३॥ आराधिक हुइने, कीधो खेवो पार। हुवा मोटा मुनिवर, नाम लियां निस्तार ॥४४॥धन्य जिनपाळ मुनिवर, दोय धनावा साध। गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जशे आराध ४५ मल्लि-

नाथना मंत्री, महाबळ प्रमुख मुनिराय । छह मुगते सिधाया, गणधर पदवी पाय ॥ ४६ ॥ वाळि जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नाम प्रधान, पाते चरित्र लेइने, पाम्या मोक्ष निधान ॥ ४७ ॥ धन्य सेताळि मुनिश्वर, दियो छकायने अभयदान । पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवळज्ञान ॥ ४८ ॥ धन्य पाचे पाण्डव तजी द्रौपदी नार । स्थिवरनी पास, लीधो, संयम भार ॥४९॥ श्री नमि वदननो, पहवो अभिग्रह कीध । मास मासखमण तप, शत्रुंजय जइ सिद्ध ॥५०॥ धर्मघोष तण शिष्य धर्मरुचि अणगार । कीडीओनी करुणा आणी दया अपार ॥५१॥ कडवा तुंबानो, कीधो सघळो आहार । सर्वार्थसिद्ध पहुंता, च्यवि

लेशे भव पार ॥ ५२ ॥ वळि पुंडरिक राजा-कुंडरिक डगियो जाण, पोते चारित्र लेइने, न घाली धर्ममां हाण ॥ ५३ ॥ सर्वार्थसिद्ध, पहोंचा, च्यावि लेशे निरवाण ।श्री ज्ञातासुत्रमें जिनवर कर्या वखाण ॥५४॥ गौतमादिक कुं-वर, सगाअठारे भ्रात।अंधकाविष्नूसुत, धाराणि जेनी मात ॥५५॥ तजी आठ अंतेउरी, करी दीक्षानी वात, चारित्र लेइने, कीधो मुक्तिनो साथ ॥५६ श्री आणिकसेनादिक, छये सहोदर भ्रात।वसुदेवना नंदन, देवकी जेनी मात ॥५७॥ भद्दिलपुर नगरी, नाग गाहावइ जाण ॥ सुळ-सा घरे वधिया, सांभळी नेमिनी वाण ॥५८॥ तजी बत्रीस अंतेउरी, नीकळीया छिटकाय । नळकुबेर सरिखा । भेट्या नेमिना पाय ॥५९॥

करि छट छट पारणा, मनमें वैराग्यलाय । एक मास सथारे, मुगति विराज्या जाय ॥६० ॥ वाळि दारुक सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय । । वळि कुमर अनादृष्टि, गया मुगति गढ माय ६१ । वसुदेवना नंदन, धन्य धन्य गजसुकुमाळ रुप आति सुदर, कळावंत वय बाळ ॥ ६२ ॥ श्री नेमि समीपे, छोड्यो मोह जजाळ । भिक्षूनी पडिमा, गया मसाण महाकाळ । ॥६३॥देखी सोमिल कोप्यो, मस्तके बाधी पाळ खेरना खीरा, शिर ठविया असराळ ।६४। मुनि नजर न खंडी मेटी मननी झाळ । परीसह सहीने, मुगति गया तत्काळ ।६५। धन्य जाळि मयळी, उवयालादिक साध । सांब प्रद्युमन, अनिरुद्ध साधु अगाध ॥६६॥ वळिसवनेमि

द्रढनेमि, करणी कीधी वाध । दशे मुगते प-
होता, जिनवर वचन आराध ॥६७॥ धन्य
अर्जुनमाळि, कियो कदाग्रह दूर । वीरपे व्रत
लेइने, सत्यवादि हुवा शूर ॥६८॥ करी छट
छट पारणां, क्षमा करी भरपूर। छ मास माहि,
कर्म कियां चकचूर ॥२९ ॥कुंवर अइमुत्ते, दी-
ठा गौतमस्वाम । सुणि विरनी बाणी, कीधो
उत्तम काम ॥७०॥ चारित्र लेइने, पहोत्या
शिवपूर ठाम । धुर आदिमकाइ, अंत अलक्ष-
मुनि नाम ॥७१॥ वाळि कृष्णरायनी, अग्र म-
हिषी आठ । पुत्र वहु दोये संच्या पुण्यना
ठाठ ॥७२॥ जादवकुळ सतियां, टाळ्यो दुः-
ख उचाट । पहोंता शिवपुरमे, ए छे सूत्रनो
पाठ ॥७३॥ श्रेणिकनी राणी, काळे आदिक

वश जाण । दशे पुत्र वियोगे, सांभळो वीरनी वाण ॥७४॥ चंदनबाळा पे, संयम लेई हुवा जाण । तप करी देह शोंशी, पहोत्या छे निरवाण ।७५। नवादिक तेरे, श्रेणिकनृपनी नार, चंदनबाळापे, लीयो संयम भार ॥ ७६ ॥ एक मास संथारे, पहोता मुक्ति मझार । ए तेवुं जणानो अंतगडमां अधिकार ॥ ७७ ॥ श्रेणिकना बेटा, जाळियादिक तेवीश । वीरपे व्रत लइने, पाळ्यो विश्वा वीश ॥७८॥ तप कठण करीने, पूरी मन जगीश । देवलोक पहोंता, मोक्ष जाई थशे ईश ॥७९॥ काकंदिनो धन्ना, तजी बत्रीशे नार महावीरसमीपे लीधो संयम भार ॥८०॥ करि छट छट्ट पारणा आयंबिल उज्झित आहार । श्रीवीरे

वखाणया, धन धन्नो अणगार ॥ ८१ ॥ एक मास संथारे, सर्वार्थसिद्ध पहुंत। महाविदेह क्षेत्रमां, करशे भवनो अंत ॥८२॥ धन्नानि रीते, हुवा नवेइ संत । श्री अनुतरोवाइमां, भाखी गया भगवंत॥८३॥सुबाहु प्रमुख, पांचसो नार । तजी वीपरें लीधां पंच महाव्रत सार ॥८४ ॥ चरित्र लेइने, पाळ्यां निरतिचार । देवलोके पहोंता, सुखविपाके अधिकार ॥८५॥ श्रेणिकना पैत्रा, पैामादिक हूवा दश । वीरपें व्रत लेइने, काढ्यो देहनो कस ॥ ८६॥ संयम अराधी, देवलोकमां जइ वश । महा विदेह क्षेत्रमां, मोक्ष जाशे लेइ जश ॥८७॥ बळभद्रना नंदन, निषाधादिक हुवा बार । तजी पचास अंतेउरि, त्याग दियो संसार ॥८८॥

सहु नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध । सर्वार्थसिद्ध पहोंता, होशे विदेह में सिद्ध ॥८९ ॥ धन्नो ने शालिभद्र, मुनिश्वरोनी जोड। नारीना बंधन, ततक्षण न्हांख्यां त्रोड ॥९०॥ घर कुटंब कबीले, धन कचननी कोड । मास–मासखमण तप, टाळशे भवनी खोड ॥९१॥ सुधर्म स्वामीना शिष्य, धन्य २ जंबुस्वाम। तजी आठ अन्तेउरि मात पिता धन धाम ॥९२॥ प्रभवादिक तारी पहोंत्या शिवपुर ठाम, सूत्र प्रवर्तावि, जगमां राख्यु नाम ॥९३॥ धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना नंद। शुद्ध अभिग्रह पाळी, टाळि दियो भवफंद ॥९४॥ वळि खंधक ऋषिनी, देह उतारी खाल । परिसह सीहन, भव फेरा दिया टाळ ॥९५॥ वळी

खंधक ऋषिना, हुवा पांचशे शिष्य । घाणीमां पील्या, मुगति गया तजी रीश ॥ ९६ ॥ संभूति विजय शिष्य, भद्रबाहु मुनिराय । चौद पूर्वधारी, चंद्रगुप्त आण्यो ठाय ॥ ९७ ॥ मुनि आर्द्रकुमार ने, थुळिभद्र नंदिषेण । अरणिक अइमुतो, मुनीश्वरोनी शेण ॥ ९८ ॥ चोवीशीना मुनिवर, संख्या अठावीस लाख । ने सहस्र अडताळीस, सूत्र परंपरा भाख ॥ ९९ ॥ कोइ उत्तम वांचो, मोढे जयणा राख । उघाडे मुख बोल्या, पाप लागे विपाक ॥ १०० ॥ धन्य मरुदेवी माता, ध्यायो निर्मळ ध्यान । गज होदे पाम्या, निर्मळ केवळज्ञान ॥ १०१ ॥ धन्य आदिश्वरनी पुत्री, ब्राह्मी सुंदरी दोय । चारित्र लेइने, मुगति गयां सिद्ध

हाय ॥ १०२ ॥ चावीशे जिननी, वडी शिष्य
णी ॥ चावीशा सती मुगते पहोत्यां, पूरी
मन जगीश ॥ १ ३ ॥ चोवीशे जिनना, सर्व
साधवी सार । अडताळीस लाख ने, आठसे
सित्तर हजार ॥ १०४ ॥ चेडानी पुत्री, राखी
धर्म शु प्रीम । राजी मति विजया, मृगावती
सुविर्नात ॥ १०५ ॥ पद्मावती मयणरेहा, द्रौ
पदी दमयन्ती सीता । इत्यादिक सतीयो, गइ
जन्मारो जीत ॥ १०६ ॥ चात्रीशे नीनना,
साधु साधवी सार । गयां मोक्ष देवलोके, ह
मये राखा धार ॥ १०७ इण अढी द्वीपमां, ग
रथा नपमी वाळ । शुद्ध पच महा व्रत धारी,
नमा नमो त्रीकाळ ॥ १०८ ॥ ए जतियोस
मियाना, लीजे नित्यप्रते नाम । शुद्ध मन

ध्यावो, यह तरवानुं ठाम ॥१०९॥ ए जती सतीशूं, राखो उज्वल भाव, एम कहे ऋषि जयमल, एह तरवानो दाव ॥११०॥ संवत अढार ने, वर्ष सातो मन धार । शेहेर जालोर मांही, एह कह्यो अधिकार ॥१११॥

च्यार सरणा.

॥ अरिहंत सरण पव्वज्जामी । सिद्धसरण पव्वज्जामी ॥ साहु सरण पव्वज्जामी ॥ केवली पन्नतधम्मस सरण पव्वज्जामी ॥

पहला सरण श्री अरिहंत भगवंतका. अरिहंत प्रभु चौतीस अतीसय, पेंतीस वाणी गुण, अष्ट प्रातिहार, अनंत चतुष्टय, बारे गुण कर के विराजमान, अठारे दोष करके रहित,

चौपठ इद्र० वदनीक पूजनीक, इत्यादिक अनतगुणे करी विराजमान है। ऐसे आरिहंत प्रभू का इमभय परभव भवोभव सरणा होणा!

दूसरा सरणा श्री सिद्ध भगवतका सिद्ध भगवन अष्टगुण इगतीस आतिसय करी सहित, मोक्षरुप सुखस्थानमें वीराजमान, अनत अक्षय, अव्याबाध, अजर, अमर, आविकारी, अनत सुखमें वीराजमान, अष्ट कर्म रहित है ऐसे सिद्ध भगवंतका, इसभव परभव, भवोभव सरणा होणा!

तीसरा सरण साधू मुनिराजका साधुजी सत्ता इस गुण करी सहित, कनक कामिनी के त्यागी, सतरे भेद संजम के पालणहार, बार भेद तपके करणहार, छत्तू दोष टाली अ

हार वस्त्र स्थानक पात्र के भोगवणहार, नि-
र्लोभी, बावीस परिसह सम प्रमाण सहे, शांत
दांत—क्षांत, इत्यादि अनेक गुण सहित, ऐसे
यिग्रंथ साधूजी महाराजका इस भव पर भव
भवोभव सदा सरण होणा !

चोथा सरण केवली परूपित दया धर्मका
धर्म दो प्रकारके श्रुत धर्म सो द्वादशांगी
जिनागम । चारित्र धर्म सो आगारी अणगा
री. यह धर्म आधि व्याधी उपाधिका विनाश
णहार है. मोक्षरूप शाश्वत सुखका दाता है.
ऐसे दया धर्मका इसभव परभव भवोभव स-
दा सरणा होणा !

यह चार सरण, दुःख हरण, और न दुसरा
कोय। जो भवी प्राणी आदरे, तो अक्षय अ-

मर पद होय ॥

तीन मनोरथ

आरंभ परिग्रह तजी करी। पंच महा व्रतधार॥
अंत अवसर आलोयण। करूं संथारोसार॥

पहिला मनोरथ — समणो पासक (साधु की सेवा करने वाले) श्रावक जी ऐसा चिंतव की, कब मैं चौदे प्रकारका बाह्य और नव प्रकारका अभ्यंतर परिग्रह से तथा आरंभ से निवर्तुंगा ? यह आरंभ परिग्रह काम क्रोध मद मोह लोभ विषय कषायका वढाने वाला दुर्गतका दाता, मोहमत्सर रागद्वेषकामूल धर्म ज्ञान क्रिया क्षमा दया सत्य संतोष सम कित संयम तप ब्रह्मचर्य सुमतिका नाश कर

नेवाला, अठारे पापका बढानेवाला; अनंत संसारमें भवानेवाला. अध्रुव, अनित्य, अशाश्वता, असरण, अतरण, निंग्रथोंका निंदनीक, ऐसे अपवित्र आरंभ परिग्रहका मै जब त्याग करूंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ?

दुसरा मनोरथः—समणोपासक श्रावक जी ऐसा चिंतवे—विचारे की, कब में द्रव्ये भावे मुंड होकर दश याति धर्म, नव वाड विशुद्ध ब्रह्मचर्य, पांच महाव्रत, पांच सुमति, तीन गुप्ति, सतरे भेदे संयम, बारे प्रकारे तप छकायका दयाल, अप्राति बंध विहार, सर्व संग रहित वीतरागकी आज्ञा मुजब चलनेवाला होउंगा? जिसदिन निग्रंथका मार्ग अंगिकार

करूगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा।

तीसरा मनोरथ — समणोपासक श्रावक ऐसा चितवे की, किस वक्त में सर्व पापस्थानक आलोय निंदी नि शल्य हो सर्व जीवोंसे खमत खामणा कर त्रिविध २ अठारे पापको त्याग जिस शरीरका मैंने अतिप्रेमसे पाला है ऐसे शरीरसे ममत्व त्याग छल्ले श्वासोश्वास तक वो सीराके चार अहारको त्यागक तीन आराधना चार शरणा सहित आयुष्य पूरा करूगा, पंडित मरण मरूगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होगा।

यह तीन मनोरथका विचार करता हुवा ... महा निज ... उपराज, ससार प्रत करे सा ... अनुक्रम सर्व दु खसे ... अनत अनत गु ...

तीन मनोरथ ए कहे। जोध्यावे नित्य मन।
साक्तिसार वरतेसहु। तोपावे शिवसुख धन॥

चौदह नियम.

१ साचित—सजीव वस्तु.
२ द्रव्य—स्वाद तथा नाम पलटे जित्ने.
३ वियग—दूध, दहि, घी, तेल मीठास.
४ पन्नी—पगरखी, मौजा, खडावे वगैरे.
५ तंबोल—मुखवास, सुपारि प्रमुख.
६ वस्त्र—पहरने ओडनेके कपडे
७ कुसुम—सुंगणेकी वस्तू, फूल प्रमुख.
८ वाहन--घोडा, गाडी, जाहाज प्रमुख.
९ सयन--पाट, पलंग, वीछाने.
१० विलेपन—तेल, पीठी शरीरके लगाने

की वस्तू

११ बंभ-ब्रम्हचर्य, कुशीलकी मर्यादा

१२ दिशा ऊंची नीची श्रीछी दिशा

१३ नाहण स्नान करने की, वस्त्र धोनेकी

१४ भतेपु आहार पाणीका वजन

१५ पृथ्वीकाय-मट्टी, लूण इत्यादिक.

१६ अपकाय-पाणी, नीवाण, परंडे प्रमुख

१७ तेउकाय अग्नी, दीवा, चुला चिलम

१८ वाउकाय-हवा पंखा, झूला

१९ वनस्पति काय लिलोत्री, शाख, फल.

२० त्रसकाय-हलते चलते जीव,

२१ असी हथीयार, सूइ, तरवार

२२ कम्मी-खतीवाडी

२३ मम्मी-व्यापार, लिखणका

यह तेवीस बातोंकी नित्य मर्यादा करने से सर्व लोककी अव्रत आणी बहूत बंध हो जाती है. जीवको थोडे ही कालेंम मोक्ष के परम सुखकी प्राप्ती होती है.

॥ केवलानन्द छन्दावली ॥

मङ्गलाचरणम्

॥ मनोहर छन्द ॥

श्री अरिहन बार गुणश्रम ॥ सिद्ध गुण आठ प्रभु भीराजे मुगत है ॥ आचार्य छत्तीश गुण ॥ पची उपाध्याय गुण ॥ साधु गुण

शताइश ॥ देत है सूगत है॥ सर्व एकशाय अठ।
गुण माल हीये रट । सुद बुद्ध शक्तीदेय।
हरत कुमत हे ॥ मन वचकाय थित । बंदत
में नितंतित । कहेत हे केवलरिख । दीजो
सूजुगत है ॥ १ ॥ चोवीसी जिनराज । थांगे
गणधर चवदेसे बावन । साधू लक्ष अठावी
स छांष्ट सहश्र जाणी हे । साधवी छीयाली
लाख, नेउहजार चारसो छे । श्रावक पच्चा
वन लाख साडीपन्नेर सहश्र बखाणी हे। श्रा
विका किरोड एक, पांचलाख दश सहश्र ।
चउ तीर्थतणो सहु लेखो इम आणी है ॥ क-
हेत केवल रिख, वंदु नित एक चित । इन्न
के प्रसाद कंथू वाणी सुख दाणी है ॥ २ ॥

॥ श्री आदोनाथ [ऋषभदेव] ॥
॥ जी का स्तवन ॥

प्रथम नमू अरिहंतने जी । कांइ गुरुवा गोतमस्वाम ॥ आपतणा गुण गामस्यूंजी । कांइ श्री आनेश्वरस्वाम ॥ आदइ आय जिनेश्वरोजी ॥ ए आकडी ॥ १ ॥ मा-मरुदेवीना लाडलाजी ॥ काइ नाभीराय कुळचद ॥ जुगल्या धर्म नीवारनेजी । काइ । वरताया आनेद ॥आद ॥ २ ॥ मा-मरुदवी मुगते गयाजी । काइ नाभीराय हुवा ्व ॥ से पण मुगत सिधावीयाजी । काइ छ टवी कर्मरी खव ॥ आद ॥ ३ ॥ शिवा मगलानेशिवा नदाजी। काइ यह थार दा नार ॥ ममारना सुग्व भोगवीजी । पछ लीनो सजम भार ॥ आद

॥ ४ ॥ ब्राह्मीजीने भरतश्वरजी । कांइ शिवा मंगलाजीरा पुत ॥ वली अठाणू पुत्तर हुवा जी ॥ कांइ एकण घरनो सूत ॥ आद ॥५॥ बाहुबलजीने सुंदरीजी । कांइ शिवानंदाजीरा जाण ॥ सघलाइ संजम आदरीजी । कांइ पाम्या पद निरवाण ॥ ६ ॥ बीसलाख पूर्व कूंवर रह्याजी । कांइ त्रेसठ लाखनो राज ॥ एक लाख दिक्षा पालनेजी । पूर्व चोरासीला खनो साज ॥ आद. ॥ ७ ॥ सहश्र वर्ष छ-द्मस्त रह्याजी । पछे उपनो केवलज्ञान ॥ भ-वी जीवाने तारनेजी । प्रभु पाम्या पद नि-रवान ॥ आद ॥ ८ ॥ अवघेणा धनुष्य पांच सेजी । कांइ सोवन वरण शरीर ॥ व्रषभ लं छन कर सोभताजी । प्रभु पाम्या भवजल

तीर ॥ आद ॥ ९ ॥ अष्टापद मुगते गयाजी ॥ प्रभु दश सहस्र मुनी सगात ॥ छे दिन आणसण आवीयाजी । जम्बुद्वीप पन्नतीमें वा त ॥ आद ॥ १० ॥ सम्मत उगनी सो सो भताजी । काइ चौपन्न करी साल ॥ शहर करोळी शाभताजी । काइ राजकरे भमर पाल ॥ आद ॥ ११ ॥ पोश सुदी एकम भ लीजी । थाइ वार छ शुकर सार ॥ केवल ऋ- पिनी वीनताजी । प्रभू भवोदधपार उतार ॥ाद॥ १२ ॥ इति ॥

॥श्री महावीरस्वामीजीका स्तवन॥

वर जार्न त वद्दावज। ॥ काइ चावीसमा जि नराज ॥ वि- नमवासा दशाना ॥ प्रभुनरण

तारणरी जहाझ ॥ १ ॥ महावीर जिनेश्वर वंदीयेजी । आंकडी ॥ श्री पारश्व प्रभू सुगते गयाजी । पछे वर्षे अढाई सो जाण ॥ काल व्यतीत थया थकांजी । हुवा चोवीसमा वर्धमान ॥ महा ॥ २ ॥ त्रसला देवीजी जन्मीयाजी । कांइ श्री सिद्धारथ तात । बहुतर वर्षनो आउखोजी । कांइ अवघेणा कर सात॥ महा ॥ ३ ॥ तीन ज्ञान निरमळ लेइजी । उपना गर्भामझार ॥ सोवन वरण सुहावणोजी । कांइ सिंह लछण सिरदार ॥ महा ॥ ४ ॥ चेत सुदी तेरस जन्मिया ॥ कांइ आइ छपंन कुमार ॥ मंगल गाया मिल करीजी ॥ जठे वरत्या जयजयकार ॥ महा ॥ ५ ॥ चौसट इंदर मिली करीजी । कांइ मेरुगीरी ले जाय ॥

रत्न सिंहासन बेठायनेजी । कांइ कलशे जल न्हावराय ॥ महा ॥६ ॥माता पासे मुकिनेजी। इन्द्र गया स्वर्ग मझार ॥ कुवरपणे सुख विलसनेजी । पछे परण्या जसोदा नार ॥ महा ॥ पुत्री एक थांरे हुइजी । कांइ प्रियदंशणाजी नाम ॥ जम्मालीजीने परणायीयाजी, कांइ जोग देखीने ठाम ॥ म ॥ ८॥ पीछे सजम आदर्योजी । कांइ एकल्हाभगवान । बारे वर्ष छद्मस्थ रह्याजी । पछ उपनो केवळ ज्ञान ॥ महा ॥ ९ ॥ प्रियदंशणाजी सजम लीयाजी । काइ जम्मालीजी भी लार ॥आज्ञा उलघी आपरीजी । लीधो किल्मुस्वामें अवतार ॥ महा १० ॥ तीस वष घरम रह्याजी । कांइ मंयम वर्ष ययाल ॥ वष बहुतरको

आउषोजी ।भोगा माक्ष गया दयाल ॥ महा. ॥ ११ ॥कार्तीक वद अमावास्याजी । कांइ पावापुरीमें जाण । रजनी मध्यने अवसरेजी । हुवा चर्म प्रभू निरवाण ॥ महा.॥ १२ ॥ पंचमा आरामें वर्ते छजी । कांइ सासण थांरो सार ॥ चार तीर्थंर हृदयमेंजी । कांइ वरते जयजयकार ॥ महा. ॥ १३ ॥ संवत उन्नीसो सोभताजी । कांइ चौपन केरीसाल ॥ शहेर करोली सुहामणोजी । कांइ राज करे। भमरपाल ॥ महा ॥ १४ ॥ पोस सुदी पांचमभलीजी । कांइ वार छे मंगल सार, केवल रिख अरजी करेजी । प्रभू भव दुःख दुर नीवार ॥ महा. ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ श्री पार्श्वनाथजीका स्तवन ॥

श्री पार्श्वप्रभूजी । थारा दरशणरी म्हाने चायना ॥ आ ॥ आश्वसेण कुल कीर्तिधारी । भामाराणी सुत जाया ॥ पोस वदी दिन द शम जाणा ॥ काशी देशमें आयाजी ॥ श्री ॥ १ ॥ बणारसी नगरीमें जन्म लीयो तब छप्पन कुमारी आइ ॥ गावे बाजे ताल लगावे । नृत्य करे उमाइजी ॥ श्री ॥ २ ॥ चौसठ इद्र मिल महोत्सव करने । मरू शिखर न्हवराय ॥ पार्श्वनाम स्थापन करीने । माताजी पासे लायेजी ॥ श्री ॥ ॥ ३ ॥ बालपणामें रमता रमता । माताजीके लार ॥ गंगा तटपर आये चलकर । तापसके दरबाराजी ॥ श्री ॥ ४ ॥ नाग नागणी जल

ता देखकर । तापसको बोलाया ॥ क्या अ-
कारज करता जोगी । जरा दया नही लाया-
जी ॥ श्री ॥ ५ ॥ नवकार मंत्रका पद संभ-
लाकर । स्वर्ग गती पहोंचाया ॥ धरणिंदर
पद्मावती प्रगटे । प्रभूजीका गुण गायाजी
॥ श्री ॥ ६ ॥ जोबन वयमें परण्या प्रभूजी ।
श्री परभावती नार ॥ राजपाटको छोड लि-
या फिर । संयमपदको धारजी ॥ श्री ॥ ७॥
कुमठ मरकर हुवा मेघमाली । प्रभुजी हुवा
अणगार ॥ पिछला भवका वैर लेवणको ॥
तुर्त हुवा तैयारजी ॥ श्री ॥ ८ ॥ जलदी ज-
लदी आकर उसने । मूशल जल वरषाया ॥
नाक बरोबर आया पाणी । प्रभुजी नही घ
बरायाजी ॥ ९ ॥ संकटसें सिंहासन कम्पा ।

इन्द्र इंद्राणी आया ॥ पद्मावतीजीने लीय सिर उपर । इंद्र करत रहे छायाछी ॥ श्री ॥ १०॥ तुर्त आया अपराध क्षमाकर । चरण सीश न माया ॥ हार कुमठ और हाथ जोडकर । देवलोक सिधायाजी ॥ श्री ॥ ११ ॥ कर्म काटकर केवली होकर । पाया पद निरवाण ॥ शहेर मुम्बाइमें गुण गाया । केवलरिख हित आणजी ॥ श्री ॥ चिंचपुगली मुम्बावे । हनुमानगलीमें आया ॥ मगलदास की वाडी माय । चौमाने सुख पायाजी ॥ श्री ॥ १३ ॥ सवत उन्नीस इगसट कार्तिक । वद तेरस शनिवार ॥ चार ठाणासे कीदा चौमासा । अमालख रिखकी लारजी ॥ श्री १४ ॥ पूज्य साहेब कहानजी ऋषीजीकी, सम्प्रदाय वेठाण॥

चारुं मांहेसु मोतीरिखजी । कर गया कल्याणजी ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ चौवीसी जिन स्तवन ॥

श्री जिनराज भजोरे भाइ । सघरल संकट दूर टलत है । शिवपुरका सुख दाई ॥ श्री जिन. ॥ आंकडी ॥ ऋषभ आजित संभव अभिनंदन । ध्यावत आणंद थाइ ॥ सुमत पद्म सुपार्श्व चंदा प्रभू । भजतभर्म मिट जाइ ॥ श्री. ॥१॥ सुबुद्ध शीतल श्रेयांस वासपूज्य। वसीया हियडा मांई ॥ वीमल अनंत धर्मनाथ शांती जिन । शांती जग वरताइ ॥ श्री ॥ २ ॥ कुंथू अरह मल्ली मुनिसुव्रतजी । शिवपुर जाइ वस्याइ ॥ नमी नेमी पार्श्व महावीरजी

। शासण गया दिपाइ ॥ श्री ॥ ३ ॥ अनत चौवीसी मुगत पहोंची। आठू ही कर्म खपाई॥ शहर आगरे लोहामडीमें । केवलऋषि गाइ ॥ श्री ॥ ४ ॥ सवत उन्नीसो पच्चावन । कुजा आसोज माइ॥ इग्यारस दिन अर्ज करत हे ॥ जनम मरण दो मीटाइ ॥ ५ ॥

॥ श्री गुरुजीका स्तवन ॥

॥ वारी जाऊ मैं गुरुकी । जिन समकित रत्न पायाजी ॥ जा ॥ विषम पथसे शुभ पथ लाय । कृपणता शक्ति गीनायो जी ॥ वारी ॥ ॥ १॥ म निरगुण था दास लाहेगा । सुवर्ण गार कर या नी ॥ वारी ॥ २॥ राजेश्वर ओर अर्मा चम्कनायाजी ॥ वा

री ॥ ३ ॥ समकित दीपक घट मांहे जोयो । मिथ्या तिमीर मीटायोजी ॥ वारी ॥ ४ ॥ भेद विज्ञान ज्ञान वाह्य अंतर । जीवादिक दरसायोजी ॥ वारी ॥ ५ ॥ आत्म अनुभवको सर दीनो । अटल राज पथ पायोजी ॥ वारी ॥ ६ ॥ उगणीसे छप्पन शुद्ध पूनम । मृगसर लाहोर आयोजी ॥ वारी ॥ ७ ॥ केवल रिख गुरुचरणको किंकर । वारंवार गुण गायोजी ॥ वारी ॥ ८ ॥

॥ जिनवाणी स्तवन ॥

॥ श्री जिनवाणी सुणो भवी प्राणी । वाणी अमृत नीर समाणी ॥ धन जिनवाणी ॥ ॥ आ ॥ जोजन गामिनी प्रभुजीनी वाणी ।

चौतीस अतीशय पेंतीस गुणवाणी ॥ जे नर सुणत महा सुखदाणी । स्वर्ग मोक्षका सुख की नीशानी ॥ श्री जिन ॥ १ ॥ भव्यजन सुनकर तृपत होवे । सुरस माडे खेचासाणी ॥ भाग्य विना कहो किण विध लहीये । समकित जोस हीये प्रगटाणी ॥ श्री जिन ॥२॥ मिथ्या तिमिरको विनाश करत है । ज्ञान उद्योत प्रकाश धराणी ॥ सुरनर इन्द्र चक्रवर्त सुणता । राजा मंडलिक सेठ सेठाणी ॥ श्री जिन ॥ ३ ॥ सर्ववृत ओर देशवृत ले । केई पाम्या छे स्वर्ग निरवाणी । नर्क निगोदका दु ख दीया मेटी । जन्म जरा ओर मरण मीटाणी ॥ श्री जिन ॥ ४ ॥ सूणो जिणवाणी प्रेम हीये आणी । पाखंड मतको मान गला

णी ॥ राग द्वेषको काम नहीं है । समतारस सूण चित लेवो ठाणी ॥ श्री जिन. ॥ ५ ॥ उन्नीसे छप्पनकी साले श्यालकोट पंजाबमें जाणी ॥ केहत केवलरिख अवसर आयो । चूकत मनमांये पस्ताणी ॥ श्री जिन ॥ ६ ॥ चेत सुदी ग्यारस के दिवसे। गुरू मुख वचन अती सूखदाणी ॥ विनय साहित जे चितमें धरसी । शांती देवे ताप हटाणी ॥ श्री जिन ॥ ७ ॥

॥ अथ पांच कल्याणकी सझाय ॥

जयजय जिन त्रिभुवन धणी। करूणानिधी कृपाल ॥ आ ॥ त्रिकालका जिनरायना। वरणु पंच कल्याण ॥ ते सुनजो चितलायने॥

धरी निश्चल ध्यान ॥ जय ॥ १ ॥ स्वर्ग नर्क थकी आवीया । माता उदर मझार ॥ जननी मनोरथ पूरीया । दीठा स्वपना दश चार ॥ जय ॥ २ ॥ हर्ष धरी जाग्या पदमणी । जइ वीनव्यो भूपाल ॥ स्वप्नपाठक को तेडके निर्णय कीयो महीपाल ॥ जय ॥ ३ ॥ तीन ज्ञान छे निर्मळा । प्रभूने गर्भके मांय ॥ प्रथम कल्याणक चवन ए । थयो श्री जिनराय ॥ जय ॥ ४ ॥ बीजो कल्यानक जन्मको । शूभ घिरीया मझार । सुख समाधीना जोगथी । लीयो जिननो अवतार ॥ जय ॥ ५ ॥ ॥ छप्पन कुमारी आइने । गाया गीत मनोहर ॥ जननी प्रभुने न्हवरावीया । फेली घरने मझार ॥ जय ॥ ६ ॥ चोसट सूरपती आवीया । मे

रू शिखेर ले जाय ॥ जन्म मोहछत्र कीयो हर्षथी । खीरोदक न्हवराय ॥ जय ॥ ७ ॥ पीछा मेली माता कने ॥ देव गया निज ठाम । कुवर पणे सूखे आतिक्रम्या । जोवन वय हुइ जाम ॥ जय ॥ ८ ॥ केइ परणी छिटकाय दी । पूत्रादिक परिवार ॥ केइ प्रभू कुंवारा पणे । लीनो संयम भार ॥ जय ॥ ९ दिक्षा अवसर आवीया । सूरपती सहू साथ॥ औछब तीजा कल्याण को । कीयो सुरनरनाथ ॥ जय ॥ १० ॥ चोथो ज्ञान पेदा हुयो ॥ छद्मस्त जिनराय ॥ उपसर्ग खमी तपस्या करी । चार कर्म खपाय ॥ जय ॥ ११ ॥ आयो गुणस्थान तेरमो ॥ पाया केवल ज्ञान ॥ सुरिंद्र आइ मोछव कीयो । यथो चोथो क-

नो जी ॥ प्रभू सार करो अब मेरी ॥ ये वि-
नंती मानोजी ॥ जग ॥ १ ॥ मैं अनंत काल
दुःख पायो ॥ नही मारग आयोजी ॥ भव अ
टवीमांये भमतो ॥ अब सरणो सहायोजी ॥
जग. ॥ २ ॥ मैं जाण्यो निश्चय तुजने ॥ मेरे
रखवालोजी ॥अब वांह पकडके तारो ॥ दो
भव दुःख टालोजी ॥ जग.॥३॥एककिंचितद्रष्टी
तेरी ॥ शुभ मुजपर होवेजी ॥ सब दुःख द-
रिद्र महारा ॥ एक छिन्नमें खोवेजी ॥ जग.
॥ ४ ॥ तुमजीव अनंता तार्या ॥ भव दुःख
थी उवार्याजी ॥ अब वृध विचारी श्वामी ॥
करो म्हारा धार्याजी ॥ जग ॥ ५ ॥ कहे के-
वल रिख कर जोडी ॥ करो केवलनाणीजी-
॥ उन्नीसे सतावन जेठ वद । सातमकही वा-

णाजी ॥ जग ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उववाइ सूत्र भावर्थ सझाय ॥

चंपानगर निरुपम सुंदर । बाग बगीचा बारू ॥ गढ मढ मंदिर हाट हवेली । सोभा विविध प्रकारु हो ॥ १ ॥ भव्यजन । श्री जिन वंदन जाये ॥ आं ॥ राजा कोणिक श्रेणिक पुतर न्याय नीती गुण धारो ॥ राणी सुभद्रा आदी परवारे । शोभे इंद्र सम सारे हो ॥ भव्य श्री ॥ २ ॥ राजाजीरे एहवी प्रतिज्ञा । श्री जिन जिहां बीराजे ॥ तेह वधामणी आया पीछे । अन्य काम करणो छाजे हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥ ३ ॥ इण कारण एक उतम सेवक । एहवो प्रमाण ठेराये ॥ नित प्रते आइ ते राजने ।

वीतक वात सुणावे हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥४॥
एक दिन श्री जिनराज पधारे । एहवो भाव
वतायो ॥ सुण राजाजी अति हरषाया । न-
गर भणी सजायो हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥५॥
चौदे हजार मुनीवर लारे । आरज्या छतीस
हजारो । पूर्ण भद्र वगीचा में उतर्या । हर्ष्यो
माली अपारो हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥ योग द्रव्य
लेइने चाल्यो । राजाजी पासे आवे ॥ जिन
पुरुषांरा दर्शन चाहो । ते मुज बाग शोभावे
हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥ ७ ॥ सांभल राजा दी-
नी वधाइ । साढी बारा लाख धनो ॥ कर
आडंबर वंदण चाल्या । साथे लेइ सज्जनो ॥
भव्य ॥ श्री ॥ ८ ॥ चमर छतर देखी जिन

राजना * पान्च अभीगम कीना ॥ नमस्कार कर सन्मुख बेठा । वाणी अमृत रस पीना ॥ हो भव्य ॥ श्री ॥ ९ ॥ अमोघ धारा देशना फरमाइ ॥ जिवादिक दरसाइ ॥ सुणी सभा सहु अती आणंदी । पुण्य जोग मीली जोगवाइ हो ॥ भव्य ॥ श्री १० ॥ केइक समकित शुल केइ धार्या । कइ सजम आदरीया ॥ कर करणी स्वग मोक्ष पधार्या । आत्म कारज सरीया हो ॥ भव्य ॥ श्री ११ ॥ गोतमस्वामी प्रश्न पुछ्या । सुत्र उववाइ विस्तारो ॥ म

* पांच अभिगम —सचित वस्तु दूर रखी अचित अलाग व तु दूर रखी, छत्रासण कीया । मुख आगे वस्त्र लगाय) भगवंतको देखते हाथ जोडे और मनमे अत्यंत पर्म प्रेम उत्पन्न

मंड आदी शिष्य सातसो केरो । करणीरो अधिकारी ॥ हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥१२॥ समकित निरमल ज्ञान वृत बल । सुणकर चितमांहे धारो ॥ निरवद्य करणी पार उतरणी । येही जैन मत सारो हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥ १३ ॥ संवत उन्नीसे अठावन । पोसवदी दिन दशमें ॥ शेहर भोपालमें कहे केवल रिख । आत्म राखजो वशमें हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥ १ ४ ॥ इती

॥ कुंडरीक पुंडरीक की सझाय ॥

जंबुद्वीप सुहामणोरे । लाखजोयण विस्तार ॥ मेरू थकी पूर्व दिशा । महाविदेह क्षेत्र श्रकारजी ॥ १ ॥ करणी फल देखो ॥ आंकणी. ॥ सीता नदी दीपतीरे । सब नदीया

में सिरदार ॥ तेह थकीउत्तर दिशा । पुष्क-
लावती वीजय मझारजी ॥ क ॥२ ॥ नीळ-
वंत पर्वत थकी भाइ । दक्षिण दिशमें जाण
॥ सीता वनथी पश्चिमे । श्री जिनजी कीया
वखाणजी ॥ क. ॥३ पूंडरीक राज्यधानीतिहां
रे । बारे जोयण विस्तार ॥ नव योजण पहोली
कहीजी । शास्त्रजीमें अधिकारजी ॥ क.॥४ ॥
पद्मनाभ राजा भलोरे ॥ पद्मावती
नाम नार ॥ रुपकला गुण अगली। शीलवती
न सुखकारजी ॥ क ॥ ५ ॥मस नवन दो
दीपसार । कुन्गिक पुंडरीक जाण ॥ राज ल
क्षण सहु गुणनीला । भाइ कुंडरीक कुँमर
सुजाणजी ॥ क ॥ ६ ॥ एक दिन थेवर पधा
रीयाजी । राजा वंदण जाय ॥ वाणी सुण

वैरागीया । संजम लेवाने उमायजी ॥ क. ॥ ॥ ७ ॥ वडा कुँवरने राज देरे । लीनो सयम भार ॥ कर करणी मुगते गया । हुवा निरंजन निराकारजी ॥ क. ॥ ८ ॥ पुनरपी थेवर पधारी याजी । वांद्या दोकुँवार । कुंडरीकजी श्रावक थया निग्रंथ वचन जाणनहारजी ॥ क. ॥ ९ ॥ पूंडरी कजी संजम लेइजी । बीचर्यागुरूकीलार ॥ निर्मळ संयम पालता । रोग उपनो शरीर मझार जी ॥ क. ॥ १० ॥ पूंरिक नगरी आवीयाजी । कुंडरीक वैद्य बुलाय ॥ औषधले निरोगी हुया । फिर बीचर्या जनपद मांयजी ॥ क ॥ ११ ॥ भोग देखी भाइ तणाजी । आर्त व्यापी मन मांय ॥ संजमसे मन डिग गयो । पाछा पुंडरिक पुर आयजी ॥ क.

॥ १२ ॥ मेहेल पीछे अशोक वाडीमेजी ॥ चुपके बेठा आय ॥ माली देखी अचमे भयो । फाइ दीनभ्यो रायने जायकी ॥ क. ॥ १३ ॥ भाइ आपका आवीयाजी । बेठा वाडीमांय ॥ राजजी वदण आवीया । आडंबर करी सवाय जी ॥ क. ॥ १४ ॥ वांद्या हर्ष हुलासशुजी । सन्मुख बेठा आय ॥ सुख साता पूछी घणी । कहे धन २ तुम मुनीरायजी ॥ क ॥ १५ ॥ राज छोड संजम लीयोजी ॥ नरभव सफलो कीध ॥ धिक २ होवो मुज भणी ॥ में फस्यो मोहमें इणविधजी ॥ क. ॥ १६ ॥ बोलाया बोले नहींजी । नीची निजर रखी तेह ॥ आरतवता देखने, राजा बोलेभर नेहजी ॥ क ॥ १६ ॥ ऐसा छे किसी बातकीजी ।

देवो मुज फरमाय ॥ बोल्या नही जद जाणीयो । थांरो मन राजमे लोभायजी ॥ क. ॥ ॥ १८ ॥ आप मुनीभेष पेहरीयोजी ॥तिणने दियो राज भेष ॥ गुरुने वंदणचालीया जी । उमंग धरी विशेषजी ॥ क. ॥ १९॥ आयो तेलातणो पारणोजी । गुरूने वंदी लाय ॥ अरस निरस मिलीयो जिसो। दीयो भाडो कायाने तांयजी ॥ क ॥ २० ॥ वेदना व्यापी आकरीजी । समाधीये कीयो काल ॥ तेंतीस सागररे आऊखे उपना स्वार्थसिद्ध मझारजी ॥ क. ॥ २१ ॥ तिहांथी चवी सीझसेजी । महाविदेह मझार ॥ हिवे पुंडरीक भोग लोभीयो । वल व धावा कीयो मांस आहारजी ॥ क. ॥ २२ ॥ मदिरा पी मदेमे छक्या जी । लुब्धा विषय

भोग मांय । वेदना व्यापी अती घणी । ती जे दिन आयु पुरोथायजी ॥क ॥ १३ ॥महा पापे करी उपनाजी । सातमी नर्कमे जाय ॥ तेंतीस सागरना दु खलीया । माइ शृत भगने पसायजी ॥ क ॥ २४ ॥ सवत उम्नीसे पश्चावने । आगरे लोहामडी चोमास ॥ केवल रिख करणी तणा । फल प्रत्यक्ष कीना प्रकाश जी ॥ २५ ॥इति

॥पन्नरे तीथीकी सज्झाय॥

हांरे लाला पक्म आयो पक्लो । तू तो पर भव पक्लो जायरे लाला ॥ धर्म विना यो जीवडो । कांइ भव २ गोता खायरे लाला ॥१॥ श्री जिन धर्म समाचरो ॥ आंकणी ॥ हांरे

लाला, पुन्य पाप जगमें कया । इन दोनाको रूप पेछणरे लाला ॥ पुन्यसे शिव सुख पामीये । कांइ पाप छे दुःखरी खाणरे लाला ॥ श्री ॥ २ ॥ हांरे लाला, तीन मनोर्थ चिंतवो । कांइ तीन शल्य दुःखदायरे लाला ॥ ज्ञान दर्शन चारित्रसुं । जीव तिरी गया मोक्ष मांयरे लाला ॥ श्री. ॥ ३ ॥ हांरे लाला, चार चोकडी, परहरो । चारूं सरणा राखो घट मांयरे लाला ॥ चार ध्यान जिनवर कह्या । कांइ चार वीकथा दुःखदायरे लाला ॥ श्री ॥ ४ ॥ हांरे लाला, पांचू इंद्री वश करो । लेवो पंच महा वृत धाररे लाला ॥ पांचमी गत पावे प्राणीया । कोइ पांच ज्ञान श्रेयकाररे लाला ॥ श्री ॥ ५ ॥ हां ॥ आत्म

सम छे ह काय छे । तेहनी जत्ना करो हित लॉयरे लाला ॥ षट पदार्थ ओलखो।छेह ले स्यामें तीन लो ध्यायरे लाला ॥ श्री ॥ ६॥ हा ॥ सात हाथ तन श्री वीरनो । सात नय कही जिनरायरे लाला ॥ भय विश्र सात प रहरो । सात नर्क अछे दु खदायरे लाला ॥ श्री ॥ ७ हा ॥ आठ मद उत्तम तजे । प्र वचन आठ आराधरे लाला ॥ आठ कर्म अ लगा करा । तो पामो अक्षय समाधरे लाला ॥ श्री ॥ ८ ॥ हा ॥ नव वाड है सीलकी । नवनीधी चकरीन होयरे लाला ॥ नव लो क निक देवता । नव मीत्रग छे मोयरे लाला ॥ श्री ॥ ९ ॥ हा ॥दश यती धर्म धारजो।दश प्रकार चित्त समाधरे लाला ॥ दश गुण साधू लक्षण । मित्र पुन्य हाथ जो आराधरे लाला ॥

१० ॥ हां ॥ इग्यारे पडिमा श्रावक तणी। इग्यारे अंगका होवो जाणरे लाला ॥ इग्यारे गुणधर वीरना। पाम्या छे पद निरवाणरे लाला ॥ श्री ॥ ११ हां ॥ बारे भावो भावना बारे पडीमा वहे मुनीरायरे लाला ॥ बारेवृत श्रावक तणा। बारे तप तपो सुखदायरे लाला ॥ श्री ॥१२॥ हां. ॥ तेरे क्रीया परहेरो। तेरे काठीया कीजे दूररे लाला ॥ तेरे योग त्रजिंचका। तेरे चरित्र सुख भरपुररे लाला ॥ श्री ॥१३॥ हां. ॥ चउदे भेद जीव राखीये। चीतारो चवदें नेमरे लाला ॥ चवदे पूर्वनो ज्ञान छे। चवदे राजु लोक कह्यो एमरे लाला ॥ श्री ॥ १४ ॥ हां ॥ पंधरे भेदे सिद्ध हुवा। पंदरे परमाधामी देवरे लाला ॥ पंदर दिवसको पक्ष

कीयो । किसन सुकल वो छेवरे लाला ॥ श्री ॥ १५ हां ॥ दोय पक्ष एक मास छे । दोय मास ऋतु होयरे लाला ॥ तीन ऋतु एक अयन छे । दोयँ अयने संवत्सर जोयरे लाला ॥ श्री ॥ १६ ॥ जोयण कुप चोरस विपे । भरे वालग्र कोयरे लाला । सो सो वर्षे एक काढना । से खाली एक पले होयरे लाला ॥ श्री ॥ १७॥हा ॥ दश कोडा कोड पले सागर कह्या । दश कोडा कोड सरपणी होयरे लाला । उन सरपणी पण एतली ॥ वीस कोडा काड काल चक्र जोयरे लाला ॥ श्री ॥ १८ ॥ हा ॥ अनन्त काल चक्र जीवडो । भम्यो चार गतीने मायरे लाला ॥ पण समाकित दु लभ कही चार बोल थकी कारज पायरे ला

ला ॥ श्री. ॥ १९ ॥ हां ॥ नीठ २ नर भव मिल्यो ॥ सुनी जिनवरनी वाणरे लाला ॥ सरधी फरसी जिण जीवडे ॥ ते पामे पद निरवाणरे लाला ॥ श्री ॥ २० ॥ हां ॥ संमत उन्नीसे छपने। फागण वदी दुज गुरूवाररे लाला ॥ पटीयाले देश पंजाबमें । छे राज सिंह सिरदाररे लाला ॥ श्री ॥ २१ ॥ हां ॥ केवलारिख पन्नरे तीथी । गाइ बुद्ध प्रमाणरे लाला ॥ हलु करमी सुण चेतसी ॥ सरधी जिनवर वाणरे लाला ॥ श्री ॥ २२ ॥ इति

॥ शीखामणकी सज्झाय ॥

॥ जिनवाणिश्रवणे सुणीजी ॥ जिनमारग में आय ॥ जीव अजीव जाण्या विनाजी । किमजैनी नाम धराय ॥ भवीकजन हीये वि चारी रे जोय ॥ १ ॥ सुखी होण सहूको स पेजी । सुखकी न जाणे वाम ॥ षट काया ह णना थकांजी । कहो किम सुखीया थात ॥ भ ॥ ही ॥ २ ॥ चीरो लागे आगली जी ॥तडफ २ दु ख पाय ॥ छेदत भेदत जीवने जी । दया न आणे घटमाय ॥ भ ॥ ॥ही ॥ ॥ ३ ॥ त्रस स्थावर जीवा तणाजी । लूटे ह रषी प्राण ॥ समकिती नाम धराइयोजी मि थ्यातीरा एलाण ॥ भ ॥ ॥ही ॥ ८॥ चीर फा

ड भडिता करेजी । कंद मूल सब खाय ॥ रात्री भोजन कर्या थकांजी । किण रीते जैनी थाय ॥ भ ॥ ही. ॥ ५ अणगल पाणीपिवतो-जी । अणगल नीरे न्हाय ॥ अणगले कपडा धोवणाजी । साबण खार लगाय ॥ भ. ॥ ही ॥ ६ ॥ पाणी ढोले दयाविनाजी । वे वे मोरी खाल ॥ त्रस जीव तिणमें मरेजी । चाले अज्ञानीरी चाल ॥ भ ॥ हीं ॥ ७ ॥ सुल्या धान वेंचे सेखेजी । जंतर घाणी पि-लाय ॥ रात दिवस आरंभ करेजी । जरा द-या नही लाय ॥ भ. ॥ ही ॥ ८ ॥ कुशी कु वाडा पावडाजी । वेंचे शस्त्र अजाण ॥ एक-उदररे कारणेजी । करे नर्क री खाण ॥ भ ॥ ही ॥ ९ ॥ शीखामण देतां थकां जी । मन

में म लाजो रोस ॥ ओषध तो कडवी पीया जी । मिटे आत्म रो दोष ॥ भ ॥ ही ॥ १० ॥ सुधभाव हिरदे धरोजी । मतकरो किंचित अकाज ॥ जीवाकी जतना करोजी । सीजे वांछित काज ॥ भ ॥ ही ॥ ११ ॥ समत उ गीसे छपनाजी । कातीवद आठू जंबुमाय ॥ अनर्था दडने छोडीयेजी । कहे केवल हित लाय ॥ भावि ॥ हीये ॥ १२ ॥

॥ बार मास(महीना) की सज्झाय ॥

सुनोजी भवीजीवां । जतन करोजी थारे मासम ॥ आ ॥ चेत कहे तू चेत चतुरनर । नी।न तत्व पेछाण ॥ अरिहंत देव निर्ग्रंथ गुरु जी । धर्म दयामें जाण हो ॥ सु ॥ १ ॥ वे

शाख कहे विश्वास न कीजे । छिन २ आयू-ष्य छीजे ॥ छेकायकी हिंशा करतां । किण विध प्रभुजी रीजेजी ॥ सु ॥ २ ॥ जेठ कहे तूं है अती मोटो । किसे भरोसे बैठो ॥ दिन २ चलणो नेडो आवे । लेले धर्मको ओ-टोजी ॥ सु ॥ ३ ॥ अषाड कहे आत्म वस क-रीये । सबही काज सुधरीये ॥ थोडा भवांके मांय निश्चे । मुगत तणा सुख वरीयेजी ॥ सु ॥ ४ ॥ श्रावण कहे कर साधूकी संगत । ले-ले खरची लार ॥ बार २ सतगुरु समजावे । व्यर्थ जन्म मत हारजी ॥ सु ॥ ५ ॥ भादव कहे भगवंतकी वाणी । सुनीया पातक जावे ॥ शुद्ध भावसे जो कोइ सरधे । गरभवास नहीं आवेजी ॥ सु ॥ ६ ॥ आसोज कहे तूं

आछी करले। नर भव दुर्लभ पायो ॥ धर्म ध्यान में सेंठो रहीजे। मत पडजे भर्ममांयोजी ॥ सु ॥ ७ ॥ कार्तिक कहे तु क्यां तकताहे। हिरदय माही धीचारो ॥मातापिता सुत धेन भाणजा। अन समे नहीं थारोजी ॥ सु ॥ ८ ॥ मगसर कह मृग समो जीवडो । काळ सिंघ विकराळ ॥ गुड्यो आऊखो उठ चलेगो। का [illegible] जाल्जो ॥ सु ॥ ९ ॥ पोष कहे तूं [illegible] ॥ परभवसे नहीं डरता ॥ पाप क्यों दुरगतमें पडताजी मोहमांहे उलज्यो । कर ॥ धन कुटंब सब छोड [illegible]यगो थारोजी ॥ सु ११ [illegible] खल्यो । ज्ञान तणा

रंग घोली ॥ कर्म वर्गणा गुलाल उडावो । जला भव भ्रमण होलीजी ॥ सू ॥ १२ ॥ उन्नीसे पचास फागणे । नाथदुवारे आया । गुरु खुबारिखजी प्रशादे । केवल रिख वणायाजी ॥ सुण ॥ १३ ॥

॥कुगुरु की सज्याय॥

कुगुरु संग न कीजीये । कुगुरु छे दुःख दाय हो भवीयण ॥ कू ॥ आ. ॥ जिम छिदर नावा जलभरी । पेली आप डूबाय हो भवीयण ॥ पाछे डूबोवे पारने ॥ तिम कुगुरु दुःख दाय हो भवीयण ॥ कु ॥ १ ॥ काष्ट नावा छिदर विना । पत्थर उतारे पार हो भवीयण ॥ तिम सतगुरूना संगथी । पापी

गया मोक्ष मझार हो भवीयण ॥ कु ॥ २ ॥
भूल्या अटवी में पड्या । दुःख पामे विन खाण
पान हो ॥ भ ॥ तिम भूल्या धर्म अनादको
। पीडावे अज्ञान हो ॥ भ ॥ कु ॥ ३ ॥ के-
इक हिंम्या पाते करे ॥ करावे वे उपदेश हो
॥ भ ॥ केइ जीव बचाया पापकहे ज्यारे नहीं
समकितरी रेष हो ॥ भ ॥ कु ॥ ४ ॥ शुद्ध
मारग पाले तेहनी । निंधा करे धरे द्वेष हो
॥ भ ॥ भारी । करमा जीवडा । आगे पा
मसी क्लेष हो ॥ भ ॥ कु ॥ ५ ॥ हिंसा झूट
चोरी नारी । परिग्रह तजे अेह हो ॥ भ ॥
तेहीज सद्गुरु जाणजो ॥ भक्ती कीजो धर
नेह हो ॥ भ ॥ कु ॥ ६ ॥ उगणीसे गुणसट
पोषकी । धन्न एकम नकाणी माय हो भ ॥

केवल रिख कहे कुगुरूको । संग तज्या सुख थाय हो ॥ कु ॥ ७ ॥

॥ सात दुर्व्यश्नकी सझाय ॥

जीवा वारुं छूरे म्हारा वालहा । तजो सात व्यश्न दुःखदाइ जी ॥ ज्यां नर सातू सेवीया । ते तो मर दुर्गतमें जाइ ॥ १ ॥ जीवा वारुंछु जी म्हारा वालहा ॥ आं. ॥ जुवा खेलण नहीं भला । यह तो जेह खेले नर नारो जी ॥हारी पांडव द्रौपदी, बली राज गया सहु हारोजी ॥ जी. ॥ २ ॥ मदिरा पीवे मूरखा । ज्याने शुद्ध न रहे तिल मातोजी ॥ लोग हंसे निंदा करे । बली परवश रहे दुःख पातोजी ॥ जी. ॥ ३ ॥मांस भक्षे मदमे छके । वली

कन्द मूळ सब खावेजी ॥ भक्षा भक्ष गिने न हिं । ते तो मरीने दुर्गत जावेजी ॥ जी ॥ ४ ॥ धरया प्रीत धन कारणे । याती हाव भाव दिखलावेजी ॥ बीते धन जब गांठको । यानो दुर्ने ही बदल जावेजी ॥ जी० ॥५॥ लूटे प्राण परजीवका । येनो हंस हंस खेलशी काराजी ॥ करुण दिल आणे नहीं । ज्यारा खोटा हासी हवालो जी ॥ जी ॥ ६ ॥ चोरे धन काइ पारका । याने देवे कलेजे दाहोजी ॥ दु खीया करे परजीवने । कहो आप सुखी किम थाहाजी ॥ जी ॥ ७ ॥ परनारी प्रत्यक्ष बुरी । याने कही जिनश्वर रायाजी ॥ जीस्त चूट कालजा । याना मुख नर लजायोजी ॥ जी ८ ॥ उगणीस उपन भला । अम्माल पजावेन

मांइजी ॥ फागण सुद आठम गुरु । कहे केवल रिख हितलाइजी ॥ जी ॥ ९ ॥

॥ आठ मदकी सज्झाय ॥

मद मत कीजो उत्तम सज्जन तुम । ये तो मद छे अती दुःखदाइ हो लोए ॥ आ ॥ आठ मद सुत्रमें दाख्या । ते तो न्यारा न्यारा देउं बताइ हो लोए ॥ एक मद (मद्य) पीया दुःख पावे । तो आठु वालारो कांइ थाइ हो लोए ॥ मद ॥ १ ॥ जात तणो मद कीयो हरकेसी । तो चंडाल कुल लीयो वासो हो लोए ॥ तप कर कायाने उज्वाली । मुक्त गया कर्म करी नासो हो लोए ॥ म ॥ २ ॥ कुल मद कीधो मरियंच कुवरे । तो कोडा कोड

सागर भमाया हो लोए ॥ चोवीसमां जिन हो शिव पहुता । तो मदथी घणो दुःख पाया हो लोए ॥ म ॥ ३ ॥ बल मद श्रेणिक राजा ए किधो । तो नर्क तणो दुःख लीधा हो लोए ॥ आवती सर्पणी तिर्थंकर होइ । मुगते जावसी सीधा हो लोए ॥ म ॥ ४ ॥ सनत कुमार देवविप्र आगे । रूप मद करी पोमाया हो लोए ॥ रोम रोममें क्रिम उपन्या सातसे वर्षे सुख पायो हो लोए ॥ म ॥ ॥ ५ ॥ मुनी करकुंडू तप मद कीधाथी । तप ग्यानी अनराय आइ हो लोए ॥ ठवो ऊनो लाइने खात्र । पण पोरसी तपस्या न थाइ हो लोए ॥ म ॥ ६ ॥ दशारण भद्र रिद्धीनो मद कीधा । इंद्र गाल्यो मद सयम लाधो हो लो

ए ॥ पाछो इंद्र आइ पग लाग्यो । आत्म कारज सीध्रो हो लोए ॥ म ॥ ७ ॥ स्थूल-भद्र सुत मद करने । पूरण अर्थ नहीं पाया हो लोए ॥ गुणंवत भणी अभीमान म कीजो । नित रीजो आत्म नमाया हो लोए ॥ म. ॥ ८ ॥ षट खंड चक्री ब्रह्मदत्तराया । लाभ-ना मद मांहे आया हो लोए ॥ मुलगी ग-माइ नर्क सिधाया । तो तेंतीस सागर दुःख पाया हो लोए ॥ म ॥ ९ ॥ इम पूर्वला द्र-ष्टांत सांभली । दो आठू मदने टाली हो लो-ए । केवलरिख कहे सुरत सांभलो । पाइ जो गवाइ उजवालो हो लोए ॥ म. ॥ १० ॥ संमत उन्नीसे इगसट साले । नाशिक न-गरी शेके काले हो लोए । चेते सोही सु-

खीया पावे । रगपन्चमी शनीवारे हो लोप ॥ म ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ धर्म झाझकी सझाय ॥

मोहन आठ लगर वु सवाइ । शिवपुर जावण जहाझ वनाइ ॥ आ ॥ जन्म मरणके जलमें देखो । सजमरुपी जहाझ तिराइ ॥ सतगुरु ज्यारा खेवणवाला । भवी जीवाको लीया वे टाइ ॥ तो ॥ १ ॥ पचम्हाव्रत पंचरग न्यारा । द्रढ मन स्थापके ध्वजा उडाइ ॥ ज्ञान रुपणी डोर लगी है ॥ शुकल ध्यानसे उंची चडाइ । ॥ तो ॥ २ ॥ पच्च सुमत ले पंच जिन बेठा पचमी गतको दुवारे उमाइ ॥ द्वादशवाला द्वा दशनाइ । मूर्ख देखके रहा मुरजाइ ॥ ३ ॥

उज्वल भावकी पवन लगी जब छिनमें पहों-ची द्वीपके माइ ॥ केवल रिख करजोड वीनवे । ज्ञान दुर्बीन स्युं मुगत बताइ ॥ तो. ॥-॥ ४ ॥ अमर सेहरमें अमर हो गये । उगणीसें पचावन गाइ ॥ फागण सुदी चवदशके दि-वसे । स्थावर थिरता अंत हे नाहीं ॥ तो. ॥ ५ ॥

॥चित समाधिके दश बोलकी सज्झाय॥

चित्त समाधी होवे दश बोलां । भाख्यो श्री जिनराजरे प्राणी ॥ पुण्य करीने पामे चे-तन । यह नर भवमें साजरे प्राणी ॥ चित ॥ ॥ १ ॥ आ ॥ धर्म उपदेश सुणे जिनवरको । पामे चित हुल्लासरे प्राणी ॥ समकित रत्न प्रगटे घटमें । अनुभव रस कस खासरे प्रा-

पी॥ चि ॥ २ ॥ देव अपूर्व रिद्धि देखने । देवीचित्त हुपोर प्राणी।आगारी अणगारीकरणी कीधाना फल पायरे प्राणी ॥चि ॥ ३ ॥सुप ना साचा सुखना दाता । देखे पिछली रातरे प्राणी ॥ जाग तुर्त निंद्रा नही लेवे । पामे फ ल साक्षातर प्राणी ॥ चि ॥ ४ ॥ जाती स्म रण ज्ञान लहने । पूर्व भवांतर जाणारे प्राणी । उत्कृष्टा नवसे लग देखे ॥ सन्नी तणा ए- नाणारे प्राणी ॥ चि ॥ ५ ॥ अवधी ज्ञानना भेद असंख्या । अवधी दर्शन संगरे प्राणी ॥ देखसी बुद्ध जग चैतन्यकी । अपडवाइ मन रगरे प्राणी ॥ चि ॥ ६ ॥ मन पर्यवका भेद दोय छे । रजु विपुल तस नामरे प्राणी ॥ ए उपज्या चित ठामे आवे । गुण तणा ए ठा

मरे प्राणी ॥ चि ॥ ७ ॥ केवल ज्ञानने केवल दर्शन पाम्या पद निरवाणरे प्राणी । जन्म जरा और मरण मीटावे । सिद्धपुर सुख अहीं ठाणरे प्राणी ॥ चि. ८ ॥ पंडित मरण करे जे प्राणी । उतम करणी साजरे प्राणी ॥ आवागमनरा दुःखसे छूटे । इम कह्यो जिन राजरे प्राणी ॥ चि ॥ ९ ॥ संमत उनीसे छप्पनका । वैशाख वद नव मंगलवाररे प्राणी । स्यालकोटमें कहे केवल रिख । दश बोले जय जय काररे प्राणी ॥ चि ॥ १० ॥ इति

॥ कमलावतीकी लावणी ॥

तृष्णा तजनी है अतीदुक्कर । धन जेह तृष्णा परहरे ॥ जिन तृष्णा त्यागी । ते नर भ-

वसागरसे तुर्त तिरे ॥ टेर ॥ इक्षुकार नगरीरे
को राजा । इक्षू नाम तिहां राज करे ॥ कम
लावती राणी । सुख भाग विलासमें दिन गुजरे
॥ भग्गू पुरोहित जस्सा भारजा दोइ पुत्रपमो
ह घर ॥ रबे दिक्षा लेवे इमचिंती पल्लीमें वास
कर ॥ मेला ॥एक दिन अण चिंतीया साधू
तिहा चल आयजी ॥ सूण उपदश दोइ पुत्र
तुर्त वेरागी थायजी । मा बाप तिणरे मोह से
भी चउ नग चिट कायजी ॥ प्रभूत धनको त्याग
गये राजा खबर ए पायजी ॥ मिलत ॥ लाभ
जगा अनममें भारी । राजा जिनकी रिद्धहरे
॥ जिन ॥ १ ॥ लगी भाडाकी हेड नगरमें ।
राणीजीकी निजर पडे । या मनम धीधार आ
ज य राजा द्रिणकी रिद्ध हर ॥ द्रव्या गामके

प्रधान दंडया के कोइ गडीयो धन जडे । पूछे दासीसे तब चेडी चंचल अर्ज करे ॥ झेला ॥ भग्गू प्रोहित रिद्ध त्यागी । राय खजाने जाय-जी ॥ हूकम करो बाइजी मूजपे । लावुं मेहेल-रे मांय जी ॥ राणी कहे एसा जो धनकी । म्हा-र इच्छा नांयजी ॥ राजारी तृष्णा देखने । राणीजी दिल मुरजायजी ॥ मिलत ॥ जाकर समजाऊ राजाने । इण धन्नसे नहीं भव दुःख टरे ॥ जिन. ॥ २ ॥ उतर मेहेलसें आइ सभामें । हाथ जोड यों अर्ज करे ॥ म-हाराज सुणीजे । या रिद्ध उत्तम नहीं चित धरे ॥ दियो दान हाथसे फिर लेवो । जुगत नहिं सब जन उचरे ॥ सामी सोचना कीजे। मेल सम जाणी उत्तम परहरे ॥ झेला ॥ वम्यो

आहार माछा करे ते नीच जात केवायजी ।
इम सुणी राजाजी बोल्या राणी तुज शुद्ध
नायजी ॥ मद्य छकी गेलाकी परे बोले छे खोटी
बाय जी ॥ तूं छोडे इणसमे तो तुजने दु शाबासी
सवायजी ॥ मिलत ॥ राणी कहे मैं यह छिटकाइ
इण धनमें कहोजिकमें काज सरे ॥ जिन ॥ २
आज्ञा दयो संजम लस्यूं । तुम पिण छांडो
म्हाराया ॥ या रिद्ध दुखदाइ । तुछ जीतव
काज क्यों ललचाया ॥ राजा राणी संजम
लकर । आतम कारज सिद्ध कीया ॥ धन छ
उ नर नारी । [ ] न नगरका सुख लि
या ॥ क्षरा ॥ इण पचम का लमें सुख थोडा
दु ख मजायजी । जन जइ चतुर सुरम प
न्या गाना म नजी ॥ उताम गुणमठ घेत

सुदी, तीज शुक्र आयजी । हाजा पुरमें केर वल रिख ए ख्याल जोड सुणायजी ॥ मिलता तृष्णा तज समता धारे । ते संसार सागा सेज तरे ॥ जिन ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ कालकी लावणी.

काल बडा बलवान । कालने सब जग लुंटाजी ॥ क्या बुढा क्या जुवान । बाल नहीं इस छूटाजी ॥ टेर ॥ बडे २ राजान जुवान केइ । सूरा जोधाजी ॥ चडे घोडे अस्वार हाथी के सोभे होदाजी ॥ दे दुश्मनपर धाव जाय फिर डेरा देनाजी ॥ जिहा धी आ गया काल निंदमें सूता रहेताजी ॥ चाल ॥ मनकी रह गइ मनमें । म्हाराज रह गइ म-

नमें ॥ मिलत ॥ आयुष्य जिनका खटाजी ॥
॥ क्या ॥ १ ॥ कहुं रावणकी बात । राज
लकाका करताजी ॥ कुंभकरण और बिभी
षणथे । जिनके भ्राताजी ॥ इन्द्रजीतसा पूत
और था । बहु परवाराजी ॥ किया सीताका
हरण लछमणने उसकु माराजी ॥ चाल ॥
फजीती होती । महाराज फजीती होती ॥मि
राज बदरोने लूटाजी ॥ क्या ॥ २ ॥ चक्री
महाबलवान सेमूनी छह खंड रायाजी ॥
चगा सातमा खड साधन अभीमान जा ला
याजी ॥ हुवा जहाज अस्वार साथमें बहु सुर
रीनाजी ॥ और चक्रबृन यों मनमें चीनाजी
॥ मत्र मिटाया नवकार फांगणी रत्नसे घि
सक जी ॥ बेठी जहाज पाताल पुण्य ते

खुट गये विसके जी ॥ चा ॥ गया नर्क सप्त मी । म्हाराज गया नर्क सप्तमी ॥ मि. ॥ तिहां तो यमने कूटा जी ॥ क्या. ॥ ३ ॥वसुदेवकृष्ण म्हाराज हुवे तीन खंड के स्वामीजी ॥ छप्पन कोडके नाथ दुवारका नगरी नामीजी ॥ खुट गये जिनके पुण्यके रिद्धि सहु विरलाइजी ज ल गया सारा गाम देखता क्षिणके मांही जी ॥ गये कसुंबी बनमें निर बिन तड फड करताजी ॥ आ गया उनका काल बाण जब प्राण जो हरताजी ॥ चा. ॥ राम हुये साधू । म्हाराज राम हुये साधु ॥ मि ॥ जगतकुं जाणा झुटाजी ॥ क्या ॥ ४ ॥ मथुराका राजा कंस जरासिंधका जमाइजी ॥ जीवजसा घर नार देवीकी बेहन केलाइजी ॥ गर्भ सात लिये मांग वसुदेव वाच

जी ॥ क्या ॥ ६ ॥

कायाकी चेतनको शिखामण लावणी

चिदानंद जगके सेलाणी । वसो हमारी नगरी जब तक है दाणा पाणी ॥ टेर ॥ काया केती सुणरे चेतन दो दिनका नाता । तेरी खिजमतमें ऊभी रही हुं अब क्या फरमाता ॥ करो मजा दिल रालके जोडी तेरी मेरी खासी ॥ मुझे छोड मत जाणारे चेतन लगा प्रेम फासी ॥ अरज करुं करजोड लालजी मे हुं पटराणी ॥ वसो. ॥ १ ॥ सुण कानसे राग छतीसो जीवडा सुख पावे ॥ रह्या इसकमें भींजके दुर्गन्ध आगे दिखलावे ॥ छोडो खोटा गाणा जो परभवों सुख चावे ॥ येही कान

से सुगो वचन जिनवरका मन भावे ॥ मान हमारी बातके चेतन हुं में अगवाणी ॥ बसो ॥ २ ॥ लगा नेणका ध्यान रूपको सहा २ रेवे । नारी जोबन भरीके नेसर बाण समी फके ॥ नहीं है तुजकु लाज के चेतन घटा २ पेख ॥ देख तेरी बदबोइ के न्याती गोती में मेहक ॥ जिनकी नीची द्रष्ट के भगवंत आप समा जाणी ॥ बसे ॥ ३ ॥ अत्तर मोतीया गुलाब केवडा ॥ खस १ । और हीना ॥ नाक वासना लेना के उस्में हो गया लीना ॥ नाक नमन नहीं करता मगरुरीमें अकडाता ॥ रहगया । फिर जगतमें भमरा इससे दु ख पाता ॥ में तेरी खिजमतमे हूगी सुगधी घ णीयाणी ॥ बसो ॥ ४ ॥ मुखम चावे माल

के षटरस तुजको बहु भावे ॥ कंद मुल मद्य मांस खाय मर दुर्गतिमें जावे ॥ पडे मुद्गलकी मार दुष्ठको कहो कुण छोडावे ॥ खाय २ के जन्म गमाया पीछे पस्तावे ॥ में हुं तेरी दासीरे चेतन । भज तूं जिनवाणी ॥ वसो. ॥५॥ कर सोले सिणगार के देही देव सभी सोवे ॥ देख दरपणमें मुखडा मेरा चंद समा मोवे ॥ लगे अतर फूलके अबला लटका कर जोवे ॥ चले निरखता चाले के मुजसम और न को होवे ॥ अवसर आयो हाथ के चेतन मतकर तूं हाणी ॥ वसो. ॥ ६ ॥ कर सद गुरूकी संगत दुर्गतिका जड दे ताला । पांचू इंद्रिकीजे वशमें हो जग रक्षपाला ॥ बनास नदी गांव बडामें-केवल रिख गावे । जेठ मासकी सुद सात

मी । सहुका मन भावे ॥ मैं तुजको समजाऊं लालजी समता चित ठाणी ॥ वसो ॥ ७ ॥

॥ दया की लावणी ॥

दया जगतमें है अती सुंदर । सुण ली जो सब नरनारे ॥ जिन पुरुषोंने यथा जो पाली शास्त्रमें है विस्तारे ॥ टेर ॥ धर्मरुची जिने दयाके खातर । कडवा तुम्ब किया आहार ॥ स्वार्थसिद्धमें जाय बीराजे । हो रहे जय_ जयकारे ॥ तैतीस सागरका आयूष्य पाये । हो गये एका अवतारे ॥ मनुष्य भवका लाहा ले के गये जो मुक्ती मझारे ॥ द ॥ १ ॥ नेमीनाथ बावीसम जिनवर । कृष्ण वासुदेव के लार ॥ छपन कोड जादव मथी आये ।

जान सजी खुब तैयारे ॥ तोरण आये पशु छुडाये । तज राजुल गये गिरनारें ॥ सती संगाते मुक्त सिधाइ अष्टकर्म बंधन टारे ॥ द ॥ २ ॥ पार्श्व प्रभुजी कवरपणेमें । खेलत गये गामके बारे ॥ देख तापसकों पूछण लागे बोले तपसी अंहकारे ॥ तप जप करता लावा लेता । तुजको शुद्ध नहीं क्यारे ॥ जब बोले पार्श्व कुमरजी । नाग नागणी क्यों जारे ॥ द. ॥ ३ ॥ लकड फाड जले सर्प काडी । दिया श्रवण जब नवकारे ॥ इंद्र इंद्राणीका पद देकर । आप लिया संमज भारे ॥ खमे परिसह केवल पाये । तारी जग तीरे संसारे ॥ पार्श्व प्रभु विख्यात जगतमें । नाम जप्या खेव पारे ॥ द. ॥ ४ ॥ चौवीसमे जिनराज दया

काज । मुनीवर अपने उगारे ॥ भवनंत शि
ष्य गोसाला बचाया । तेजु लेस्य से त्यारे ॥
ओर बहु नरनारी तारे । बरताये मंगला चारे
॥ सासन सुखकारी यह वरते नाम लिया होय
निस्तार ॥ व ॥ ५ ॥ देव परिक्षा कारण आ
ये । मेघरथ राजा दयाले ॥ रुप परेवो करी
ससखेवो । बेठो गोदी मझारे ॥ पारधी मांगे
भक्ष आपणो । राजा मांस निज दीयो त्यारे
॥ शांतीनाथ हुवे शांतीके दाता । पट पदवी
तणा जे धारे ॥ व ॥ ६ ॥ परदेसी राजा
अती पापी । केसी स्रमण कियो उपगारे ॥
उपदेश सुणाइ पाप छुडाइ । तर बेलासे दी
यो तार ॥ भमा करी सुयाभदेव हुवे । एक
भवम कर जासी पार ॥ गौतमस्वामी कीनी

पूछा । राय प्रसेणी अधीकारे ॥ द. ॥ ७ ॥
मेतारज मुनी गया गौचरी । सोवनकार दि-
यो आहारे ॥ सोवन जब कुकड ले चुगीया।
नहीं बोल्या तब अणगारे ॥ सोवनकारेन दि-
या परिसहा । क्षमा तणा मुनी भंडारे ॥ कर्म
खपाया मुगत सिधाया । सफल किया जिन
अवतारे ॥ दया ॥ ८ ॥ मेघ मुनीश्वर गजके
भवमें । सुशल्यो दीनो उवारे ॥ संसार परत
कर नरभव मांही । श्रेणिक घर लीयो अव-
तारे ॥ आठ अंतेवर परणी परहर । तज्या
राज और भंडारे ॥ कर प्रभू सेवा स्वर्गका
मेवा । चाख लीया जिन तत्काले ॥ दया. ॥
॥ ९ ॥ राजग्रहीको राजा श्रेणिक । महामं-
डालिक भरे भंडारे ॥ अमर पडो बजायो मु-

लकमें । फेल्या यशको विस्तारे ॥ क्षायिक समकिती तिर्थंकर पद । उपराजो तेह्विज धारे॥ आवती सर्पनी पद्मनाभ जिन । होजासी शिव मझारे ॥ दया ॥ १० ॥ साधु करे स धारा जगमें जीव दया कारण प्यारे । दया जे पाले धन नरनारे सफल जिनोका अवतारे ॥ सम्मत उन्नीसे पञ्चावन फागण, सुद दा शम मंगलवारे ॥ देश पञ्जाबके अमृतसरमें केवलरिख करी उचारे ॥ दया ॥ ११ ॥

॥ पाच इंद्रके गुणकी लावणी ॥

चित लगाकर सुणो चतुर नर, नरभव मुशकल्स पाया ॥ लख चौरासी भमता २ चिंतामणी हाथे आया ॥ टेर ॥ सतगुरू केरी

वाणी सुणकर कान पवित्र करो जिया ॥ विषय रागका संग निवारो अही इशकके वश मुया ॥ नेत्र जीवदयाको पाया । नीचा नेत्र जिनोने किया ॥ उत्तम जिनको केह लोगमें इस भव परभव सुखी हुया ॥ परनारी है दुःखकी खाण । रावण मर दुर्गत पाया ॥ लख ॥ १ ॥ नाक नमन कर देव निरंजन । येही पदार्थ जगमाइ । सुगंध वासनाको तज देना । अली लिपट मुवा पंकज जाइ ॥ फुल अत्तरकी गंधमें मोह्या ॥ नहीं सार कह्या जिनराइ । सुगंध दुर्गंध दोनू आये समता राखो सब भाइ ॥ गुरु गीतार्थका चरण भेटके सफल करो अपणी काया ॥ लख ॥ २ ॥ सरना रटो जिनवरके नामको । अशुद्ध शब्द
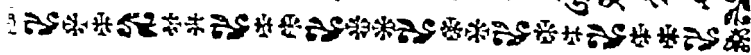
मत उच्चारो ॥ खान पानमें वीचार रख्खो । तजो अभक्ष कंदमुल आहारो ॥ पंखी राते नहीं चूगा लेवे मनुष्य होके क्यों धारो ॥ र सना वस पड मर गइ मच्छी । फठ छिदा अति दुखकारो ॥ अभक्ष भोजन रात जी मना है भाइ अती दुःखदाया ॥ लख ॥ ३॥ यह काया है कल्पवृक्ष सम कर ले अब सुकृत प्यारे ॥ तप जप संमज जो धनी आवे सो प लसे नेरे लारे ॥ पायामेंका भाग देवो दानमें येही लक्ष्मीका है सारे ॥ अहमदनगरमें कहे केवलीरख उन्नीसे साठकी साले ॥ अषाढ सूदी चवदसक दिवस जयजयकार सहु घर नाया ॥ लख ॥ ४ ॥

॥ दान अधिकार लावणी ॥

जिनवाणी सार सूणो चतुर नर । जन्म सफल कीजे । पायासेका भाग दान दे । ला वा ले लीजे ॥ टेर ॥ जिनवाणी रसखाणी प्याला अमृत सम पीजे । अवसर आया हाथ विषयमें चित्त नहीं दीजे ॥ सतुगुरु तारण जहाझ परिक्षा पेली ही कीजे । भेख देख मत भूलो के गुण अवगुणको शोधीजे ॥ शुद्ध साधु निग्रंथकी सेवा प्रेम धरी किजे ॥ पाया ॥ १ ॥ दान मूल छे दोय जिनको भेद सुणो भाइ ॥ प्रथम अभय छे दान जीवोंकी करुणा चित लाइ॥ जो कोइ लूंट प्राणदयाकर उसको छोडाइ ॥ धर्म दलाली करो

प्रभु सूत्र में फरमाइ ॥ आत्म सम छे काया जाणी रक्षक हो रीजे ॥ पाया ॥ २ ॥ बीजो दान सुपातर शूद्ध निर्भय भणी देवे । षट कायाका पालनहारा बहुलो फल लेवे ॥ * चउदे प्रकारें वस्त सुजती श्रावक घर रेवे ॥ जोग बन्या उलट भावे चित चित पातरने सेवे ॥ विनती कर बार २ साधू जीको नित्य दीजे ॥ पाया ॥ ३ ॥ इन सिवाय और दान ज्ञानको मोटो फरमायो ॥ धर्म उपगरण श्रावकने दे लाभज कमायो । दया तणी जि हां माहि होवे उतम दरसायो ॥ हिंसा दान

* अन्न पाणी, मुखवास कनकावस्त्र मूत कावस्त्र मकान, पानरा बाजोट पाट, पगल पीछाना पूरण तलादी दवाइ ये साधुतके पास न रखे

को मार्ग भवीने परसन नहीं आयो ॥ अह-
मदनगरमें कही केवलरिख हितधर सुणीजे ॥
पाया ॥ ४ ॥ इति

॥ उपदेशीलावणी ॥

मुझ दोष नहीं देना किस्कु कर्म लिखा
सो थावेगा ॥ जो जिनवरका भजन करेगा
सो भव २ सुख पावेगा ॥ टेर ॥ मनुष्य जन्म
मुस्कल से पाया योंही इसको खोवेगा ॥ सु-
कृत करणी किया विना चेतन । परभव मांहे
रोवेगा ॥ बार २ सतगुरु समजावे मोह नीं-
दमें सोवेगा ॥ विन कमाइ खाली हाथे टुक २
सामे जोवेगा । सुकृत धर्म दान जो कर
ता सो तेरे संग आवेगा ॥ जो. ॥ १ ॥ देवग-

वता सेवे जिनको । को जननी उनको जा-
या ॥ केइ भुखे प्यासे बंधे खूटें केइक वोज
उठा लाया ॥ निगोदकी तो वेदना सुण
थर काळजा थराया ॥ इम जाणी धेरादया
दिलमें तो दुःख सहु छूट जावेगा ॥ जो
॥ ४ ॥ नर्क गतीमें देख वेदना परमाधामी
दत हैं । वैर बदला बांधा जिसीका फल भु-
गत कर लेत हैं ॥ इम कर्मकी गत है दुष्कर
केवल ज्ञानी केत हैं । दुकृतसे दुःख सुकृतसे
सुख सर्वही जीव जंत लेते हैं ॥ देश पंजाव
के कसवे दसकेमें । केवलरिख पद गावेगा
॥ जो ५ ॥ इति ॥

॥ गुरु प्रसाद वसत ॥

सतगुरु समजाया अन्धेरा दिलका मीटा या ॥ टर ॥ ढूंडत ढूंडत सत्धर्म दुढीया सो ही केलाया । नस्व पदार्थ हाथ लगा मुज । हिरदा मांही ठसाया । भर्म मेरा दिलका मिटाया ॥ स ॥ १ ॥ ज्यू दधी माहेसे मा खण ढूंढ । त्यों दया में धर्म घताया ॥ जि मका मव द जाण सा जाणे । मुर्ख भेद न पाया । जन्म जिन व्यर्थ गमाया ॥ स ॥२॥ अहिंशा पम धम सुखदाता । वेद पुराणे स गाया ॥ निमक पापी मिथ्यामत थापी । ता णा नाण मचाया । मर्म कुछ रती नहीं पा या ॥ स ॥ ३ ॥ भागउपभोगकी करी मर

जादा । श्रावक नाम धराया । सोही भोग त्यागीको लगावें, त्यागन भंगकराया । व्यर्थ ढोंग मचाया ॥ स ॥ ४ ॥ जीव हण्या ती· नो कालमें । धर्म यथा न थाया ॥ न्याय सोच हिरदामें बीचारो । केवलरिख दरसाया । त्याग मिथ्यात्व हटाया ॥ स ॥ ५ ॥

॥ सुमत कुमत संगकी होली ॥

ऐसी होली खेल ज्यासू दुर्गत दूर टलेरी ॥ टले—री ॥ ऐसी ॥ टेर ॥ कुमत सुमत दो नारी है चेतन । सज सिणगार खडीरी ॥ कुमत सखी दिलकी अती चंचल । चेतन संग अडीरी ॥ ऐसी ॥ १ ॥ सूण चेतन तूं वात हमारी । लेवू परिवार बूलारी ॥ हिल

कीनी रंग रलीरी॥ ऐसी ॥ ६ ॥ वैराग्य रंगकी भर पिचकारी। सन्मुख डाल दइरी ॥ भींजत भाव चड्यो चेतनको। दुर्गत टाल दइरी॥ ऐसी ॥ ७ ॥ मुगत मेले की सेहल कराइ । अमर जो पदवी दइरी ॥ देश पंञ्जाब में सेहर समाणे । केवलरिख कहीरी ॥ ऐसी. ॥ ८ ॥

॥भाव होली ॥

होली खेलो चतुर नर । चित ठिकाणे लाय ॥ ॥ टेर ॥ चार महीना चौमासीको दिन, पोषो करो हित लाय । षट कायाकी जतना कीजे, जीव सहु सुखपाय ॥ होली ॥ १ ॥ कर्म रुपीयो काष्ट जलावो । तप रुपी आगी लगाय ॥ शुभ ध्यानकी झाल चडावो

तो उची गतमें जाय ॥ होलि ॥ २ ॥ स्वध
र्मि सब ही मिल कीजे । ज्ञान रंग सुखदाय
॥ सतगुरु सीख हीये धर लीजे, तो कर्म धूल
उड जाय ॥ होली ॥ ३ ॥ सुमत सखीस
हिलमिल खेलो । तो मुगत नगर ले जाय ॥
अटल राज चसनको मिल्यो जब । जन्म म
रण मिट जाय ॥ होली ॥ ४ ॥ सम्मत उ
गीसे छपनका ॥ फागण सुद पनममांय ॥
गाम काछव चॅामार्मा पढीकमणो कीनो के-
वलारिख आय ॥ होला ॥ ५ ॥ इति

॥ ज्ञान होला ॥

मुनीश्वर खेलन ज्ञान की होली ॥ जिन
वचन में आतम वाली ॥ मु ॥ आ ॥ मति

श्रुति ज्ञान निर्मळ नीरमें । संजम रंग दीयो घोली ॥ वैराग्य भाव की ले पिचकारी । सुमत सखी पर ढाली ॥ मु १ ॥ आठ कर्मकी अनंत वर्गणा । गुलाल उडाइ भर झोली ॥ अपूर्व भाव जग्यो आतमको । भागीकुमताभोली ॥ मु ॥ २ ॥ अवध असंख्य बाजित्र सूरागी । मनपर्यव हृदय खोली ॥ केवलले के नीकेवल होवो । साश्वत सुख वरो टोली ॥ मु ॥३॥ उगणीसे पंचावन फागण । सुद आठम रंगरोली ॥ अमृतसरसे केवल रिख कहे । शास्त्र वचन ग्रहो तोली ॥ मुनी ॥ इति ॥

॥ आत्म शुद्धी—केरवा ॥

अरे मेरे प्यारे विसर मति जारे ॥ विसर

सो उंची गतमें जाय ॥ होली ॥ २ ॥ स्वध र्मि सब ही मिल कीजे । ज्ञान रंग सुखदाय ॥ सतगुरु सीख हीये धर लीजे, सो कर्म धूल उड जाय ॥ होली ॥ ३ ॥ सुमत सखीस हिलमिल खेलो । सो मुगत नगर ले जाय ॥ अटल राज चेतनको मिल्यो जब । जन्म मरण मिट जाय ॥ होली ॥ ४ ॥ सम्मत उ गीसे छपनका ॥ फागण सुद पुनममांय ॥ गाम कालुन्न चौमासी पडीकमणो कीनो केवलरिख आय ॥ होला ॥ ५ ॥ इति

॥ ज्ञान होली ॥

मुनीश्वर खेलत ज्ञान की होली ॥ जिन वचन में आत्म बोली ॥ मु ॥ आ ॥ मति

श्रुति ज्ञान निर्मळ नीरमें । संजम रंग दीयो घोली ॥ वैराग्य भाव की ले पिचकारी । सुमत सखी पर ढाली ॥ मु १ ॥ आठ कर्मकी अनंत वर्गणा । गुलाल उडाइ भर झोली ॥ अपूर्व भाव जग्यो आतमको । भागीकुमताभोली ॥ मु ॥ २ ॥ अवध असंख्य बाजिंत्र सूरागी । मनपर्यव हृदय खोली ॥ केवलले के नीकेवल होवो । साश्वत सुख वरो टोली ॥ मु ॥३॥ उगणीसे पंञ्चावन फागण । सुद आठम रंगरोली ॥ अमृतसरसे केवल रिख कहे । शास्त्र वचन ग्रहो तोली ॥ मुनी ॥ इति ॥

॥ आतम शुद्धी—केरवा ॥

अरे मेरे प्यारे विसर मति जारे ॥ विसर

मति जारे मुल माति जारे ॥ टेर ॥ चैतन्य चीर अनादीका मेला । धोकर साफ करत क्यों नी जारे ॥ अरे ॥ १ ॥ निर्मल नीर ज्ञान गंगा जल । कुदरतके दाग को साफ कर जारे ॥ अ ॥ २ ॥ मजम साबन सपेती लावे । क्रियाकी कूडी जमा क्यों नी जारे ॥ अ ॥ ३ ॥ आढन आतम आनंद पावे । निर्भयकी सेज पर मा क्यो नी जारे ॥ अ ॥ ४ ॥ कहे के वर्लाग्व यों हो पवित्र । सरसत वचन सुणत क्यों नी जारे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ उपदेश-बेलावल ॥

क्या मल २ कर धोवे । काया क्या मल २ कर धोव ॥ तेरा अमर शुद्ध नहीं होवे ॥

काया ॥ टेर ॥ न्हाय धोय श्रंगार बणाया। दरपणमें मुख जोवे पलक २ रूप पलटत तेरा। हिरदय ज्ञान नहीं जावे ॥ काया ॥१॥ कडा कंदोरा कंठी डोरा। झगमग त्रिया सोवे ॥ सुंदर रूप अनोपम दीपे। पलकमें पतको खोवे॥ का ॥ २ ॥ लाख उपाय कन्या सेती पण। काया निर्मल नहीं होवे ॥ जो पवित्र जाणे सो मूर्ख। पोमाइ धोइ डूबोवे ॥ का ॥ ३ ॥ तप जप जल साबूथी धोइ। केवलरिख शुद्ध होवे ॥ मुम्बाइ के घाट कोपरे। उगणि इकसट के पोष सोहवे ॥ का ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अनुभव भांग वसंत ॥

संजमकी मुज भांग पीलाइ। मेरे आ-

न्यों में लाली छाइर ॥ टेर ॥ वैराग्यकी बूटी पवन रसस भींजोइ ॥ किरियाकी कुंडी व णाइजी ॥ स ॥ १ ॥ ज्ञानका घाटा यतना का साफी ॥ छाणत अति सुखदाइजी ॥ स ॥ २ ॥ पीवन परम मगन हूवा मनमें । लहर हीय न समाइजी ॥ स ॥ ३ ॥ छाक चडी चतुर गती मटग । शिव रमणी सेज पीछा इजी ॥ स ॥ ४ ॥ पोढन परम सुख पात के बलारिव ॥ सतगुरु सुजस पिलाइजी ॥ स ॥ ५ ॥ च्कर शहर सतारा माइ ॥ फागण मास गाइजी ॥ स ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ समकित—ढकड ॥

सम कितनी न्मी नाहार ॥ नाहार मे

प्यारे ॥ समकितकी ॥ टेर ॥ सद् उपदेश सुणा सतगुरुका ॥ मिटा मिथ्यात अन्धकार अंध०मेर प्यारे ॥सम.॥ १ ॥शुद्ध देवगुरु धर्म पहछाण्या। लीया ज्ञान रस सार ॥ सार मेरे प्यारे ॥ सम.॥ २॥ देव निरंजन गुरु निरलोभी ॥ धर्म दयामें धार ॥ धार मेरे प्यारे ॥ सम. ॥ ३ ॥ सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र ॥ आराध्या खेवापार ॥ पार मेरे प्यारे ॥ सम. ॥ ४ ॥कहत केवल रिख दिल्लीभी देखी ॥ चांदनी चोकका बजार॥बजार मेरे प्यारे ॥ सम.॥ ५ ॥

॥ उपदेशी—केरवा ॥

गुजराले वक्त या आणवणी ॥ गूजराले. ॥ टेर ॥ बहुत बीत गइ थोडी बखत्

रही । चेते क्यों नही मूढ धणी ॥गु ॥ १ ॥ लख चोरासी भमना पायो । नरभव सबमें चिंतामणी गु. २॥सीख देत सतगुरु तुज साची ॥ ले ले समकित हीरा कणी ॥ गु ॥३ ॥ कहत केवलारिख गुजरालामें । पारणो इकचालीस काटणी गु ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ उपदेश—पद ॥

सुण लेर चतन श्री जिनवाणी । अन-मग [illegible] अमी नीका ॥ सु ॥ टेर॥ पु । पुण्य स नत्र भव पायो । तीन भवन [illegible] छे [illegible] ॥ तिनकी चाहाय करत सु [illegible] । समकितबिन नर लागत फीको।सुण ॥ १ ॥ [illegible] उत्तम कुल प । आय मि

थो पूर्व पुण्य जीको ॥ येही गमाइ पश्चाताप करेगो । गइ बात नहीं हाथ रतीको ॥ सुण ॥ २ ॥ वार २ सतगुरु समजावे । चेतरे चेतन शुभ मतीको ॥ सूकृत जाण पेछाण प्रभु गुण । देव निरंजन जैन मतीको ॥ सूण ॥ ३ ॥ जीव अजीव और पुण्य पाप है । निरणो आश्रव संवरजी को ॥ निर्जरा कारण निरवद्य करणी । वंध तोड ले मुगत गतीको सूण ॥ ४ ॥ धर्म दया विन सव जग फीरा । हिंसा करे नर मुढ मतीकों ॥ परम पदार्थ चेतन निरगुण । नहीं चेते अज्ञान बुद्धीको ॥ सुण ॥ ५ ॥ देशव्रत और सर्व व्रत ल । येही पदार्थ हे जगनीको ॥ केवलरिख करजोड वीनवे । शुभ भाव हे शुभ गतीको

सुण ॥ ६ ॥ संमत उगणीसे छप्पन साले । आसोज कृष्ण पक्ष है अती नीको ॥ एकादश गुरु भ्रु शेहेरमें । वास लीयो है चतुर मा सीको ॥ सूण ॥ ७ ॥

॥ राग द्वेष स्वरूप पद ॥

तजो २ रे भविक चितलाइ । यह तो राग द्वेश दु:खदाइरे ॥ टेर ॥ राग द्वेष दुर्गतका दाता । एथी पावे घणी असातारे ॥ ॥ त ॥ १ ॥ राग दोय प्रकार सूणीज । ज्यारा भेद न्यारा गिण लीजे जी ॥ त ॥ ॥ २ ॥ प्रसस्त राग जब आवे । शुद्ध वस्तु पे प्रेम जगावेजी ॥ त ॥ ३ ॥ गुरु शिष्य स्वधर्मी तांइ । धर्म उपकरण प प्यार आइ ।

॥ त. ॥ ४ ॥ तिणसे धर्म मार्ग जीव आवे। पण मुगत जातॉं अटकावे जी ॥ त. ॥ ५ ॥ अप्रग्नस्त रागे मोह जागे । कुटंव धन प्यारो लागे जी ॥ त ॥ ६ ॥ अब द्वेष सुणो दुःख दाइ । प्रसस्त अप्रसस्त थाइ जी ॥ त. ॥७॥ शिखामण देतॉं द्वेष आवे । पापी पे भाव क्रूर थावे जी ॥ त. ॥ ८ ॥ यह प्रसस्त द्वेष भणीजे । अब अप्रसस्थ सुण लीज़े जी ॥ त ॥ ९ ॥ करे निंदा कुआल चडावे । धरमीने देख़ दु;ख पावेजी ॥ त. ॥ १० ॥ राग द्वेष प्रकृती अठाइ । ते सुणजो तैं चित लाइजी ॥ त ॥ ११ ॥ अनंतानु वंधी अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी संजल चोक जाणी जी ॥ त. ॥ १२ ॥ क्रोध मान माया लोभ चारुं । कही

साल प्रकृती वारु जी ॥ त ॥ १३ ॥ हास रानाते भय सोग दुगच्छा । तीन वेद पच्चीस ए इच्छाजी ॥ त ॥ १४ ॥ चारित्र मोहणी जव अवे ॥ मषादिक दोष लगावजी ॥ त ॥ १५ ॥ मिश्र मोहणी उद जब आवे ॥ देवगुरु धर्म काज हिंशा थावे जी ॥ त ॥ १६ ॥ मिथ्या मोहनीने वस पडीया ॥ ते सा धर्मरे नामे चडीयाजी ॥ त ॥ १७ ॥ यह रागद्वेषका चाल्या ॥ छ माइने कर्म अजालाजी ॥ त ॥ ८ ॥ जा शा श्वमा सुख चावो ॥ तो देयान छिटकावो जी ॥ त ॥ १९ ॥ महर आपाल दश गाहणो ॥ उत्कृष्ट अठ वन ताहा उद नोर्म जाणा जी ॥ न ॥ २० ॥ इक्यानी कषर्नरम चवाणी । मुग समज

भवीक हित आणी जी ॥ न ॥ २१ ॥

॥ उपदेशी पद ॥

अरे जीया सोच अपणे मणमें । तुज जाणा है एक छिनमें ॥ टेर ॥ लख चोंरासी भमके आयो । मनुष्य केरे सदनमें ॥ माता रुद्र पिता शूक भोगवी । उपज्यो है गरभनमें ॥ अरे ॥ १ ॥ उंधे मस्तक सहे वेदना । महा अशुची तनमें ॥ पूर्व पुन्यसे बाहिर आयो । भूल गयो भजननें ॥ अ ॥ २ ॥ माता दूध पाके सुख पयो । दिन २ बढत सूखनमें ॥ जोवन वयमें परण्यां नारी । लाग रहो विपीयनमें ॥ अ ॥ ३ ॥ बुढापणमें त्रीपतीन घेर्यो । दिन रात जात दुःखन में ॥ तो

साल प्रकृनी माहु जी ॥ स ॥ १३ ॥ हास
रामति भय सोग दुर्गच्छा । तीन बेद पच्चीस
ए इच्छाजी ॥ त ॥ १४ ॥ समकित मोहणी
जय आवे ॥ अतिचारादिक दोष लगावेजी ॥
त ॥ १५ ॥ मिश्र मोहणी उद जब आवे ॥
सवगुरु धर्म काज हिंशा थावे जी ॥ न ॥
१६ ॥ मिथ्या मोहनीने वस पडीया ॥ ते ता
धर्मरे नामे धीडीयाजी ॥ त ॥ १७ ॥ यह
रागद्वेषका चाला ॥ छै माहर्न कर्म जजाला
जी ॥ न ॥ १८ ॥ जो शाश्वता सुख चावो
॥ तो वोयाने छिटकावो जी ॥ त ॥ १९ ॥
सेहर भोपाल वेश गादवाणो ॥ उगणीस अठ सन
माहा वद नोमी जाणा जी ॥ न ॥ २० ॥
इकोसी कमलरिख यावाणी । सुण समज

भवीक हित आणी जी ॥ न ॥ २१ ॥

॥ उपदेशी पद ॥

अरे जीया सोच अपणे मणमें । तुज जा-
णा है एक छिनमें ॥ टेर ॥ लख चोंरासी भ
मके आयो । मनुष्य करे सदनमें ॥ माता
रुद्र पिता शूक भोगवी । उपज्यो है गरभन
में ॥ अरे ॥ १ ॥ उंधे मस्तक सहे वेदना ।
महा अशुची तनमें ॥ पूर्व पुन्यसे बाहिर आ-
यो । भूल गयो भजननें ॥ अ ॥ २ ॥ मा-
ता दूध पाकेसुख पायो । दिन २ बढत सूख-
नमें ॥ जोवन वयमें परण्यां नारी । लाग र-
ह्यो विषीयनमें ॥ अ ॥ ३ ॥ बुढापणमें बी.प-
तीन घेर्यो । दिन रात जात दुःखन में ॥ तो

पण धर्मकी वात नचावे । हुंयो आ नरपनमें
॥ अ ॥ ४ ॥ कहत केवल रिख यह जग
झुटा । समज २ पापी मनमें ॥ नरभव है
निरवाणको कारण । सुधार ले यह क्षिनमें
॥ अ ॥ ५ ॥

॥ प्रभातीराग—शिखामण–पद ॥

प्रात समय तुम उठ भविक जन । आ
त्म कारज करीयेर ॥ टेर ॥ दुलभ लाधो म
नुष्य जन्मगे। सुधी श्रद्धा धरीयेरे ॥ देव नि
रजय गुरु निर्लोभी। धर्म दयामें आदरीये रे॥
॥ प्रा ॥ १ ॥ सामायिक शूद्ध मनसे करवो।
अशुभ कर्म दल हरीयरे ॥ नितका चवदे नेम
चीतारा । सन्वर मागधरियेर ॥ प्रा ॥ ॥ २ ॥

कथा सुणाता कथन नकीजे। प्रमादे नहीं अनूसरीयेरे ॥ मुनी आया सुद्ध भाव धरीने। प्रतिलाभी जग तरीयेरे ॥ प्रा. ॥ ३ ॥ पन्नरे कर्मादान तजीजे । पापसे पिंड नही भरीयेरे ॥ साजी साबू लोहो धावडी । वैपार यह परहरीयेरे ॥ प्रा. ॥ ४ ॥ बचन सावद्य विषयी मत बोलो । अनर्थो दंड नआचरीयेरे ॥ अनगल नीरे नन्हावो धोवो ॥ कंद मूल न चरी येरे ॥ प्रा. ॥ ५ ॥ अभक्ष आहार बहु बीज. तजी जे ॥ रात्रीभोजन नकरीयेरे ॥ दोइ वखत प्रतिक्रमण करके । लागा दोष निवरीयेरे ॥ प्रा. ॥ ६ ॥ देशपंजाबमें शेहेर लूधीयाम । पूज्य मोतीचरण पडीयेरे ॥ कहते केवल रिख सुणोभव्यप्राणी । आतमकारजसरीयेरे ॥७ ॥

उपदेशी लावणी

तजोरे क्षपात भाइ । सुवारा की जो है चहाइ ॥ टेर ॥ लक्ष चोरासी को सुगत्या । जनम और मरण करी थीत्या । सग सुगुरू की नही पायो । जिन मारगमें नहीं आयो ॥ दुहा ॥ समकित विन यो जीवडो । भम्यो अ नत संसार ॥ तारण वालो को नहीं सा । हि रदय लयो विचार ॥ मिलत ॥ हूर नरभव का जो जाइ ॥ समकित विन दु ख दणो पाइ ॥ म ॥ १ ॥ काल अनतो यों वीत्यो । धर्म बि न रह गया यो रीतो ॥ देव और धर्म गुरु वी ना । रतन सग तरे ये तीनो ॥ दुहा ॥ नि करमा पस्तायगा ॥ पडा भमन के मांय ॥ जन्म

जरा और मरण लिटावण ॥ लगे जीय हांहि उपाव ॥ मिलत ॥ सोच हिरदे ध्यान लगाइ। क्या प्रभु कहा सुत्र मांइ ॥ तजो. ॥ २ ॥ वाडा ममत करी भरीया । पापसे जरा नहीं डरिया ॥ हर्षसे हिरदा गहवरिया ॥ राग और द्वेष चित धरिया ॥ दुहा ॥ महिमा पुजाका लोलपी । करे न हित विचार ॥ इंद्रादिकयो होइ जीवडो पुजायो बहु वार ॥ मिलत ॥ पृथ्वी पाणी के मांइ ॥ उपज्यो तेही फिरजाइ ॥ तजो ॥ ३ ॥ मानसे नीची गती पावे के व्यर्था उम्मर गमावे ॥ सुगणा चित ठाम लावे। पक्ष छोड शिव पंथ धावे ॥ दुहा ॥ उगनीसे छप्पन भला । स्यालकोटके मांय ॥ केवल-रिखकी वीनती । सुणजो चित लगाय । मि-लत ॥ वैशाख सुद इग्यारस गाइ । वार शु-कर छे सुखदाइ ॥ तजो ॥ ४ ॥

॥ उपदेशी – लावणी ॥

मैं नित्य नमाउ सीस नाभीनंदनका ॥ धन
साधु सती वस कीया जो आपणे मनकु ॥
॥टेर यह मन बडा अती चंचल वस नही
आवे । जिम ताणु तिम भाग दिशो दिश
जावे ॥ इसके वश पडकर प्राणी गोता खावे
नर्क निगोदका दु ख येहा वहलावे ॥ जिहां
दु ख खमी थर २ धुजाया तनकु ॥ धन ॥
॥ १ ॥ मानुष्य देह पाइ बडी मुशकलशे
भाइ ॥ तन बाल जवानी मुफत एले गमाइ
॥ जब आया बुढापा आग्य सुजे नाही ॥ का
नका हुअ गया जाग पाव नहीं चाले । हाथो
म [illegible] नहीं चीज क मस्तक हाले ॥ अब
प्रभ भजनका उपाय जग नहीं चाले । धर
[illegible]

के देवे दुःख के बूढा निहाले ॥ ऐसी विपत में पडी भुला सुदनकु ॥ धन ॥ ३ ॥ मांगे सो चीज नहीं लावे । गाली सुनावे ॥ साठी में नाठी अकल जीभ ललचावे ॥ बेटाबेटी वहु पोता साथे नहीं आवे ॥ इस विध वीते काल । मरण कब आवे । इम जाणीने चेतो कहूं गुणी जनको ॥ धन ॥ ४ ॥ दुनिया में दुःख हे जबर जन्म मरनेका ॥ क्या गरीब धनवंत सबकू चलने का ॥ है वीतरागका सरण दुःख टलनेका । नही और कोई उपाय जगसे बचनेका ॥ कहे केवलरिख आगरमें मोक्ष गमनको ॥ धन ॥ ५ ॥ इति ॥

॥मनको शीख—पद॥

अरे मन चेत मेरा मतवाला ॥ दुर्गतका

जड व तालारे ॥ मन ॥ ॥ टेर ॥ मिथ्या मत जन्म गमायो । शुद्ध मारगमें नहीं आयो ॥ सद् गुरु बिन बहु दुख पायो ॥ इम काले अनत बीतायों रे ॥ म ॥ १ ॥ समकित बिन सुखी किम होवे । बिन ज्ञान आतम किम जोवे ॥ मूढ विरथा जन्मयो खोवे । सैं तो भव २ माहे रोवरे ॥ म ॥ २ ॥ चरित्र तारे-गत चारों । तपते ही होवे । निस्तारों ॥ शुध भाव स खवा पारो । जावे पचमी गती मझा-रो रे ॥ म ॥ ३ ॥ दान दिया दरिद्र जावे । शील्सू ऊंची गत पावे ॥ इम शिव सुख हाथे आवे । त्रिलोकीनाथ गुण गावे रे॥ म ॥ ४ ॥ उगर्नी मे छप्पनजाणो । महा बदी पंचम दिन ठाणा ॥ फिराजपुरमें केवलरिख गाण ॥ जो-चन माई पून्य गानारे ॥ म ॥ ५॥ इति॥

॥ उपदेशी गझल ॥

टूक दिलका चश्म खोल भरम कर्म की करो ॥ लख अलख चिदांनद धंद फंद से टरो ॥ टेर ॥ परसंग ममत छोड रूप आपका वरो ॥ अजी निज स्वरूप भूल क्यों भर्म जालमें पडो ॥ टूक ॥ १ ॥ अनंत सुख आपे ज्यां को चित न धरों ॥ परसंग दुःख पाय दुर्गत में क्यों पडो ॥ टुक ॥ २ ॥ मिथ्यात्व अंधकारको तो दिलसे परहरो ॥ ज्ञानका प्रकास कर के शांतीमें ठरो ॥ टूक ॥ ३ ॥ मनुष्य जन्म पाय भले काम आचरो ॥ कहेत केवलरिक दुःख दरीयेसे तरो ॥ टूक ॥ ४ ॥

॥ मन समझानेका पद ॥ प्रभाती ॥

क्या अपसोस करे मन मुरख । बीती ताय

बीमाररे ॥ आगकी शुद्ध देख समलजा ॥हो
जावो होशीयार रे ॥ क्या ॥ १ ॥ होणहारसो
निश्चे होवे । अण होणी न होणहाररे ॥ यह
निश्चय कर समझा पड्को । धरिज को ग्रद
धार रे ॥ क्या ॥ २ ॥ संतोषी जगमें सुख
पावे । हुवे लोभी आपररे ॥ ले गयो न ले
जावे काई । क्यों लोभावे गींवारे ॥ क्या ॥
॥ ३ ॥ कर २ ममत वहु धन जोड्यो । छो
ड चल्या परवाररे ॥ उसका मालक होवे दूस
रे । खावे आप आग मार रे ॥क्या ॥ ४ ॥
क्यानि पट यह रिद्ध पाइ । उपना नरक
मझाररे ॥ इम कवल मनको समजावे ॥ कर
नाल ग्राम मुगरकाररे ॥ क्या ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ कम वलीका पद ॥

रजी ीम नणा ए फवे टले नही एक

समे टाला ॥टेर ॥ देखो ए आदेश्वर स्वामी ॥ एक वर्ष भिक्षा नही पामी ॥ अपणा पोतारे घर जो नामी ॥ आगये गुवालाजी ॥ अर्ज सूणआगये गुवाला ॥ कर्म ॥ १ ॥ सेलडी रस जिनने वेहराया । वर्ष दिवसे जोग जो पाया ॥ गइ भूख त्रपत हुइ काया ॥ शांत जे दयालाजी ॥ अर्ज सूण शांत ॥ कर्म. ॥ २ ॥ देखो नेमीश्वर व्याहण आये । सब सखीया मिल मंगल गाये ॥ तोरण आये । पशू छुडाये ॥ गये गिरितज बाला जी ॥ अर्ज. ॥ गय ॥ कम ॥ ३ ॥ पार्श्व प्रभूको कष्ट दिखाया ॥ सट कुमठ मिथ्यातमें छाया ॥ क्षमा घर प्रभुतुर्त हहटाया ॥ इन्द्र जो गुण वाला, जी ॥ अर्ज इ- इन्द्र ॥ कर्म ॥ ४ ॥ वीर प्रभूने जोग उठाया तब ॥ इन्द्र केणे को आया ॥ कष्ट बहु थांणे जिनराया ॥ बणु हुं रखवालाजी ॥ अर्ज. ॥

॥ वणु ॥ कर्म ५ ॥वीरकने आघात न पावे ॥ आप आपणा कीधा पावे ॥ अनारज वेसे कर्म खपावे ॥ कर्मोकुटाला जी ॥ अर्ज ॥ कर्मों ॥ कर्म ॥ ६ होणहार सो निश्चय होवे ॥ गइ बातको तू क्यों रोवे ॥ अब ही चेतो निंदे क्यों सोवे ॥ कर्मोका चाला रे देख य-ह कर्मोका चाला ॥ कर्म ॥ ७ ॥ इम जाणी कर्मोंसे डरीय ॥ जिनेश्वर मार्ग में अनुसरीये ॥ केवलरिखकी शीख हीये धरीये ॥ है कोइ बुध वालारे ॥ अर्ज सुणो है कोइ बुध-वाला ॥ कर्म ॥ ८ ॥

हैद्राबाद(दक्षिण)में मुनी आगमन

॥ राग वणजारा ॥

चला संत पास मेरे प्यारे । यह भागान गर (हैद्राबाद) गुलजारे ॥ टेर ॥ मुन्याद

कीया चौमासा । श्रावककी पूरी आसाजी ॥
हुवा धर्म ध्यान श्रेयकारे ॥ यह ॥ १ ॥ भाइ
पन्नालालजी कीमती । बहु भावे कीनी विनंती
जी ॥ हैद्राबाद न संत पधारे ॥ यह ॥ २ ॥
अब आप कृपा कीजो । यह विनंती चित्त दी
जोजी ॥ क्षेत्र निकलसी नावारे ॥ यह ॥३॥
जब हुवा भाव मुनीवरका । पण अनजल इ-
गत पुरीका जी ॥ हुवा चौमासा बासटकारे
॥ यह ॥ ४ ॥ मुळचंद जी टांटीया भाइ ।
सगाति सारु सेवा बजाइजी ॥ सम्प हुवा ती-
नों तडमांरे ॥ यह ॥ ५ ॥ मनमाड वैजापुरे
आया । औरंगाबादे सुख पायाजी ॥ जाल-
णासे परभणी पधारे ॥ यह ॥ ६ ॥ नांदोड
इंदुर निजामी ॥ तिहां फागण चौमासी ठा-

मी जी ॥ पडिकम्या सहु अतीचारे ॥ यह॥
॥ ७ ॥ शिवरावजी श्रावक बोले । आगे
रस्ता कठिण येसोले जी ॥ डुंगरसीने लेभो
लारे ॥ यह ॥ ८ ॥ कठण परिसह उठाया ।
ऊपरान अलवाल ज आया जी ॥ श्रावक सुणी
हरख्यारे ॥ यह ॥ ९ ॥ भारकस सिकदरा
वाद । कोठीमें पाया अहलादेजी ॥ फिर चार
कमान पधारे ॥ यह ॥ १० बाबु साहेबका
मकान । पन्नालालजी रहे उस थाने जी ॥
तिहा आइ मुनीराज रह्यार ॥ यह ॥ ११ ॥
रपाल गुद नुज गनीवारो । सहु विनती करी
ररगा ॥जी मानी नय मुनीराजारे ॥ यह ॥
॥ ॥ गगा रामनागयणजी अगा दीनी।
नाना गाणा नि नानी दीनी जी ॥ नय कोट

मकान मझारे ॥ यह ॥ १३ ॥ तपस्वी केवल रिखजी मूनी अमुलखरिखजी जी ॥ सुखा रिखजी। भीलारे ॥ यह ॥ १४ ॥ पहिलां मुनीवर नहीं आया ॥ अबखुल्या भाग सवाया जी ॥ आनंद हर्ष वरत्यारे ॥ यह ॥ १५ ॥ वास बेला तेला अठाइ । पचरंगी दया समाइ जी ॥ पोसा परभावना बहुतारे ॥ यह ॥ १६ चार कमानकी छब भारी । वसे सोना चांदी के वेपारीजी ॥ जवेरीयोंकी खुली छटारे ॥ यह ॥ १७ ॥ दिगांबरी श्वेतांबरी मंदिर । यह चार कमानके अंदरजी॥धर्म ध्यान किया मिल सारे ॥ यह १८ ॥ हाथी घोडा रथ बगीया । झटका मोटरकार सजीयाजी ॥ महेबूब बादशाह प्यारे ॥ यह ॥ १९ ॥ वस

से धामन वजारे ॥ जिहां चातुर सवी नरनार जी ॥ रहे तन घने धर्म दीपारे ॥ यह ॥२० उगनीसे त्रेसठ साले । सुदी आसोज पक्रम बुधवारेजी ॥ करी केवल कौसक लारे ॥ यह ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ इगतपुरीका चौमासा की लावणी॥

अरिहंत सिद्ध समरू सदाजी, फांइ आ, चार्य उवझाय ॥ साधु सकल के चरणकू मर, वन्दु सीस नमाय ॥ गुण गाता मुनीवर तणा सर, पातक दुर टल जायजी ॥ गुण कहा लग वरणु, सत धढा हे कमल रिखजी ॥ टर ॥ १ ॥ उगणीस्मो इकसटकी साले मुम्बाइ किये चौमास । विचरत आया इ

गत पुरीमें, भव्य पाम्या हुल्लास ॥ सेके का-
ले उपदेश सुणाइ, भवीरी पूरी आसजी ॥
गुण ॥ २ ॥ सुणी उपदेश मुनीवर केरो, मन
मे लोग उमाया ॥ कीनी विनंती चौमासा
की, मिलके बाया भाया ॥ अवसर देखी जा-
णी जासी, ऐसा हुकम फरमायाजी ॥ गुण ॥
३ ॥ सेके काल में विचरतास, गया नाशक
शहर मझार ॥ फागण चौमासो उठेही की-
नो हूवो घणो उपकार । केसरबाइ करी द-
लाली, आणी धर्म पे प्यारजी ॥ गुण ॥४ ॥
नाशकवाला करी विनंती, सूणो श्री महाराज
॥ दुक्कर चौमासो इगत पूरीको, कठिण घ-
णो छे काज ॥ पहली चौमासो हुयो नहीं
तिहां ॥ पडे घणी वर्षादजी ॥ गुण ॥ ५ ॥

विचरत २ गया मुनीवरजी, 'पालखेड' म
झार ।। मूलचदजी टांटीया गया ले भायाने
लार ।।इगत पुरीमे करो चौमासो होसी घणो
उपकारजी ।। गुण ।। ६ ।। मानी विनती प
धारीया सरे, इहा तीनु अणगार।। सताइस गुण
करी दीपता सरे, ज्ञान तणा भंडार ।। लाल
चन्दजीकी जागा में, हुवा छे जयजयकारजी गु
।। ७ ।। केवलरिखजी मुनीवर वका नित
दत बखाण ।। सुत्र उत्ताराधेनजी बांचे, स
म्यकित्व कौमुदी रास जाण ।। भिन्न २ कर
समजावे सबने, करार धर्म पठानजी ।।गुण।।
।। ८ ।। गुणा मणा महाराज सागर छे म्हासु
कह्या न जाय ।। धन्न मिटाइ इगत पुरीका,
नीना सप कराय ।। तपस्या हुइ छे घणी से

हरमें दीयो अकृत छोडायजी ॥ गुण ॥ ९॥
अमोलख रत्न अमोलखरिखजी ज्ञान तणा भं-
डार ॥ वीरसेण कुसुम श्री को, चारित्र केह
सुख कार ॥ अनमतीयाने घणा समजाया,
क्षमावंत अणगारजी ॥ गुण ॥ १० ॥ सुख
लालजी मुनीवर वंका रहे आप के संग ॥
ज्ञान ध्यान तमस्याके माही, दिन २ चडतो
रंग ॥ वनीत ने ब्रह्मचारी मुनीवर, करे कर्म
सू जंगजी ॥ गुण ॥ ११ ॥ गांव २ का दर-
स्सण सारु, आया घणा नरनार ॥ घणी तप-
स्या हूइ पजुसणमे वरत्या मंगला चार ॥ सू-
ल्लभ हुया सारा नरनारी हूयो घणो उपगार
जी ॥ गुण ॥ १५ छमछरीका पारणा सरे,
किया मन हूल्लास ॥ स्थानक सामे रेलवाइमे

कियो कपाइ वास ॥ तामो आयो अथुर्वा
पणो हुवो मुनीसे आसजी ॥ गुण ॥ १३ ॥
स्वाली पटग भाया मिलने, मुनीवरजी कने
आया ॥ कीनी विनती महाराजारी, सहु
नग मन भाया ॥ चक्र उपर सु विहार करने,
घजार पठमे आयाजी ॥ गुण ॥ १४ ॥ जोग
मि-या छ भाया भागी लीजो काज सुधार॥
चतर प्रन्याड इणरवला है मिल्या एसा अण
गार ॥ पुनमचद कालाकी विनती, उतारो
भवपारजा ॥ गुण ॥ १५ ॥ सम्मत उनीसेपा

कच्छ देश पावनकर्ता आठ कोटी मोटी पक्ष के मुनिश्री नागचंदजी कृत.

तपस्वीजी श्रीकेवलऋषिजी महाराजने स्तवन
वीणम वाशोरे वीठलवाप तंमने एदेशी,

श्रुतिदेवीने समरी स्नेह गुनीजनना गुण-गावुं ॥ रसना पावन करवा कारन आतमने हुलसावुं ॥ सूविदित सगलाए, केवलऋषिजी वंदो ॥जंगम तिरथरे, नमता पाप निकंदो एटेक वीर सासनमां शांत स्वभावी गुण आगर वैरागी, सरल स्वभावी सुमता सागर, संवेगी सोभागी॥ सु ॥१॥ श्रष्टाचारी उग्राविहारी तप

धारी गुणभारी॥ आत्म तारी बोधदातारी, ता
र्यो केइनरनारी ॥ सु॥१॥ मुनिगुण धारक महा
व्रतपालक टालक विषय विकारा॥ प्रति पालक
षट कायजीवाना॥ वारक दुष्टाचारा सु॥ २॥
आगम आम्नायथी धार्या, करी विपुल अ
भ्यास ॥ अवलोक्या अत्युत्तमअर्थो हृदये धरी
उल्लास सु ॥४॥ शिष्योने सद्‌बोध दइने, सन्मा
र्गे वर्ताव्यो॥ देशविदेशे ज्यां ज्यां विचर्या ॥ धर्म
ध्वजाफरकाव्यो सु ॥५॥ धन धन मात पिता
तुम्हकरा, धनधन्य तुम्ह अवतारो॥ गामकुलने
नातने धन धन॥ धन जीवीतजयकारो सु॥६॥
निधिरस भदेशशी सवंत्सर, माघ मास उ
दारो ॥ शुक्र पंचमी रवी नंदवारे नागचंद्रकहे,
अव धारो सु ॥७॥ इति ॥

॥ दुहा ॥

पिंगल गण जाणूं नहीं । अल्पमति अनुसार ॥
रची अर्पण करूं जेष्टनें । पंडित लीजो सुधार ॥ १ ॥

॥ सामायिकके ३२ दोष ॥

१० मनके दोष—१ विवेक रहित सामायिक करे. २ यशकीर्ती निमितं सामायिक करे. ३ "करूंगा साभाइ तो होवेगा कमाइ" ऐसी इच्छा करे. ४ अभीमान करे. ५ भयनिमित सामायिक करे, ६ सामायिकके फल की इच्छा करे. ७ सामायिकके फलमें संशय करे. ८ क्रोध करे. ९ आविनय करे. १० अपमान करे. यह १० प्रकारके मनमें विचार कर सेने सामायिकमें दोष लगता है.

१० वचनके दोष—१ झूठ बोले २ विगर विचारे बोले ३ श्रद्धाके उत्थापनेका बचन बाले ४ आमिलता वचन बोले ५ नवकारादि पाठ पूरा न बोल ६ क्लेश झगडे करे ७ बारबी(खोटी)कथा करे ८ अशुद्ध बोले १० गडबडसे बोले एसे १० प्रकारेके कुबचन बोलनेसे सामायिकमें दोष लगता है

१२ कायाके दोष—१ अजोग आसनसे बैठे, २ आस्थिर आसन बैठे ३ द्रष्टी (आंख) की चपलता कर ४ पापके काम कर ५ भींत प्रमुखका टका लकर बैठ ६ बार २ हाथपांव पसारे सकोचे ७ आलश करे ८ अंगुली तथा अंग मराडे ९ शरीरका मैल उतारे १० विमाक आसन बैठ ११ निद्रा (नींद) लेवे १२

वयावच चाकरी करावे. यह १२ काम करनेसे सामायिकमें दोष लगे.

यह ३२ दोष टालके शुद्ध सामायिक करनेसे ९२५६२५९२५ पल्योपम देवताका आयुष्य बांधे, और नर्कका आयुष्य कमी करे. तथा १५ भवमें मोक्ष पावे.

॥ श्रावकके २१ गुण ॥

क्षूद्र १ खराब स्वभाव न होव, सरल गंभीर धैर्यवंत होवे २ रूपवंत तेजस्वी पूर्ण अंगवाला होवे. ३ प्रकृतिका शीतल शांत होवे, सबसे हिलमिलचले. ४ निंदनीक काम न करे, तथा उदार प्रणामी होय. ५ किसीके भी छिद्र न देखे. करूर द्रष्टी न रखे. ६ पापकर्मसे तथा

निवास करे ७ कपट दगाबाजी नहीं करे ८ विचक्षण निघामे समजनेवाले अवसरका जाण होवे ९ लज्जा शरम वाला होवे, १० दया वंत दुसरेकोंदु खी देख करूणाकरे यथाशक्ति साता उपजावे ११ मध्यस्त प्रणामी छुखवृती होवे काम भोगमें असक्त लुब्ध न होवे १२ भली दृष्टीवाला होवे किसीकामी बुरा न चितवे १३ गुणानुरागी—धर्मको दिपाने-वाले—ज्ञानवन्त—क्रियापात्र के गुणग्राम करे, बहुमान कर, साता उपजावे १४ न्यायपक्ष धारण करे म्याटा जाणे ठा छोडे १५ दीर्घ दृष्टी अग्रही विचार वाला होवे १६ विज्ञान वन्त अच्छी वुरी सब वस्तुको यथा तथ्य जैसी है वैसी देखाण १७ आपनेसे ज्ञानमें

गुणमें जो अधिक होवे उनकी सेवा भक्ती करे. १८ विनीत सदा नम्र भूत हो रहे, मान नहीं करे, १९ कृतज्ञ—अपनेपे किसीने उपकार किया होय तो उसे भूले नहीं, फेडनेकी इच्छा रखे. २० अपनेको दुःख होकर दुसरेको सुख होवे तोभी परउपकार करे. ७१ लब्ध लक्ष जैसे लोभी धनकी, और कामी स्त्रीकी इच्छा करे. तैसे श्रावकजी ज्ञानादी गुण ग्रहण करनेकी अभीलाषा रखे. सदा नवा ज्ञान ग्रहण करे, अनेक शास्त्रके जाण होवे. यह २१ गुण जिनोमे होवे उनको सच्चे श्रावक कहना.

दुहा-निजात्मकों दमनकर। परात्मको चीन ॥
परमात्मको भजन कर सोही मत प्रवीन ॥ १॥